સળંગ અંક - ૫૧ જુલાઈ -૨૦૧૧

શ્રી સ્વામિનારાયણ

માસિક

કિંમત રૂા. ૫-૦૦

અમેરિકા ખાતે પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌપ્રથમ બાળ સત્સંગ શિબિર

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

ગુજરાત ટુરીઝમની જોવાલાયક સ્થળની યાદીમાં શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમનો સમાવેશ કરવામાં આવેલ છે.

Vibrant Gujarat
Colours of India

ક્રમાંક:માર્કેટીગ/પ્રચાર/૨૦૧૧/ ૧૭૦ ૪/૬/૧૧ તા:૪/૬/૧૧

પ્રતિ,
મુખ્ય કારભારીશ્રી,
મુખ્ય કારભારીશ્રી કચેરી,
શ્રી સ્વામીનારાયણ મંદિર,
કાલુપુર,
અમદાવાદ–૧

વિષય : શ્રી સ્વામીનારાયણ મ્યુઝિયમ, નારણપુરા – અમદાવાદને પ્રવાસન વિભાગમાં જોવાલાયક સ્થળ તરીકે નોંધણી કરવા અંગે.
સંદર્ભ : આપનો તા:૩૦/૪/૧૧નો પત્ર.

મહાશય,

ઉપરોક્ત વિષય અન્વયે આજ્ઞાનુસાર જણાવવાનું કે, અમદાવાદના જોવાલાયક પ્રવાસન સ્થળોના બ્રોશરમાં શ્રી સ્વામીનારાયણ મ્યુઝિયમ, નારણપુરા – અમદાવાદનો સમાવેશ કરવામાં આવશે.

સામાન્ય રીતે ગુજરાત રાજ્યની પ્રવાસન પ્રવૃત્તિની પ્રચાર–પ્રસિધ્ધિ જુદા–જુદા માધ્યમો ધ્વારા દેશ–વિદેશમાં કરવામાં આવે છે જેથી અમદાવાદના જોવાલાયક સ્થળોનું બ્રોશર પણ ગુજરાત પ્રવાસન નિગમ ધ્વારા જ્યારે જ્યારે પ્રચાર–પ્રસિધ્ધિ કરવામાં આવે છે ત્યારે આ બ્રોશરનું વિતરણ કરવામાં આવે છે. આમ અમદાવાદના જોવાલાયક સ્થળોમાં આપના મ્યુઝિયમનો સમાવેશ થયા બાદ દેશ–વિદેશમાં આ પ્રચાર–પ્રસિધ્ધિ થશે જે આપશ્રીને વિદિત થાય.

આપના મ્યુઝિયમના ફોટોગ્રાફની શોફ્ટ કોપી તથા વિગતો નિગમની એડ એજન્સી સૌભાગ્ય એડર્વટાઈઝીંગ અમદાવાદનો મોબાઈલ નં.૯૩૨૮૫૧૯૬૯૫,શ્રી દર્શનને મોકલી આપવા વિનંતી છે.

આભાર સહ,

આપનો વિશ્વાસુ,
K. Parmar
મેનેજર (માર્કેટીંગ)

નકલ રવાના:
(૧) સૌભાગ્ય એડ એજન્સી, ૧લો માળ, શંકર ચેમ્બર્સ, એચ.કે.હાઉસ પાસે, અમદાવાદ –અમદાવાદના જોવાલાયક સ્થળોમાં શ્રી સ્વામીનારાયણ મ્યુઝિયમ, નારણપુરા–અમદાવાદ નો સમાવેશ કરવા વિનંતી છે.

Tourism Corporation of Gujarat Limited
(A Govt. of Gujarat Undertaking)
GUJARAT TOURISM
Block No. 16/17, 4th Floor, Udyog Bhavan, Sector 11, Gandhinagar - 382 016.
Phone : +91-79-23222523, 23222645, 23220002 Fax : +91-79-23238908
E-mail : Website : www.gujarattourism.com

૧.બાપુનગર એપ્રોચ મંદિરમાં ફૂલોના વાઘાથી શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજના શ્રીનાથજી સ્વરૂપે દર્શન. ૨. નારણઘાટ મંદિરમાં શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજ ચંદનના વાઘામાં. ૩. બામરોલી (મ.પ્ર.)મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી .૪. ઝુલાસણ આપણા મંદિર પાટોત્સવ પ્રસંગે આશીર્વચન આપતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી. ૫. જીવરાજપાર્ક મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે પ.પૂ.મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં અન્નકૂટ દર્શન. ૬. રાજપુરા કથા પ્રસંગે પધારેલ પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી

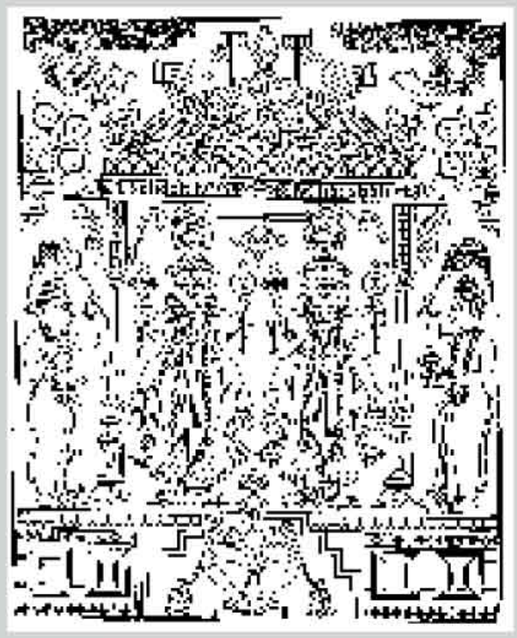

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ | अंक : ५१ | जुलाई-२०११

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	आसान	०४
०४.	"जनमंगल अभियान"	०५
०५.	भूज की व्रजभाषा पाठशाळा के अंतिम आचार्य श्री शंभुदानजी का धर्मधुरंधर् पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजने सम्मान किया	०७
०६.	पू. बापजी - चित्रकार का भी चित्र बना दें ऐसे चित्रकार है	०९
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१०
०८.	आनंद की लहर	११
०९.	सत्संग सुरभि	१२
१०.	सत्संग बालवाटिका	१४
११.	भक्ति सुधा	१६
१२.	सत्संग समाचार	२०

सत्समागम

श्रीजी महाराज ने (ग.म. २५) में कहा है कि जो भगवान के भक्त हो वे भगवान को तथा भगवान के भक्त को जो न अच्छा लगता हो ऐसा कुछ भी नहीं करें । परमेश्वर की भजन में जो अन्तराय करते हों, वे चाहे अपने सगा सम्बन्धी क्यों न हों उनका त्याग कर देना चाहिये । भगवान को न अच्छा लगता हो ऐसा अपने में कोई स्वभाव हो तो उसे शत्रु की तरह त्याग कर देना चाहिये । जो भगवान से विमुख हों उनका भी त्याग कर देना चाहिये । जिस तरह भरतजी अपनी माता का पक्ष नहीं लिये ।

भगवान के जो भक्त हों वे सबसे अधिक अपने में अवगुण देंखे । जो अपने अवगुण तथा दूसरे में गुण देखता है वही सच्चा सत्संगी है । जो दूसरों में अवगुण तथा अपने में गुण देखता है वह सत्संगी होकर भी आधा विमुख है । इसलिये सभी सत्संगी महाराज के उपरोक्त वचनामृत का नित्य अनुसंधान रखें और भगवान के अनुकूल होकर क्रियाशील रहें । चातुर्मास का आरंभ हो गया है, जिससे शिक्षापत्री में बताये गये नियमों मे से एक नियम अवश्य लीजियेगा । जितना हो सके उतना भजन अधिक करना । वर्षाऋतु का समय चल रहा है । किसान बरसात की राह देखकर बैठा हुआ है । बरसात नही हो रही है । इष्टदेव को सभी लोग प्रार्थना करें जिससे मेघ प्रसन्न होकर बरसात करें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०११)

२-३. माधापर (कच्छ) पदार्पण।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर बड़े गोरैया (त.) विरमगाँव मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पदार्पण।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर देत्रोज पुनः प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पदार्पण।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर गोठीब तथा सवगढ़ (पंचमहाल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२. संत महादीक्षा विधिअपने हाथों से सम्पन्न किये।

१५. श्री नरानारायणदेव का केशर स्नान विधिअपने हाथों से किये।

१६. जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का केशर स्नान अपने हाथों से किये।

१७. प.भ. दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (ट्रस्टीश्री) के नये बंगले का खातमूहुर्त पर पदार्पण, थलतेज।

१८. प.भ. प्रविणभाई वी. नसीत के घर पदार्पण, वस्त्रापुर।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में पदार्पण।

२३. से ५. जुलाई अमेरिका में धर्म प्रवास हेतु पदार्पण।

भावि आचार्य
प.पू. श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की तारीख

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर रामोल जामफल वाड़ी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४. से ७. जुलाई अमेरिका में सत्संग युवा शिबिर प्रसंग पर पदार्पण का आयोजन।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपैया : : www.chhapaiya.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.gopallalji.com

आसान

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने वैदिक तथा पौराणिक पूजन विधिमें जप, तप, यज्ञ, ध्यान, मंत्र, पूजन विधिमें बैठने के लिये लाभ हानि को देखकर नाना प्रकार के बैठने के आसन का निरुपण मिलता है। कार्य की सिद्धि में आसन का बहुत महत्व है।

विज्ञान के मत से उत्तर ध्रुव का मेग्नेटिक प्रेशर पृथ्वी की तरफ होने वाले तत्वों की गति की तरफ होता रहता है। अपनी शरीर पांचतत्वों से बनी हुई है, जिसका सम्बन्धब्रह्मांड के तत्वों के साथ प्रवाहित है। जब हम जप, यज्ञ, तप, दान, पूजा, होम करते हैं तब शरीर में से एक विशेष प्रकार की ऊर्जा प्रसरित होती है उस ऊर्जा को रोकने के लिये कोई आसन रुपी आवरण न हो तो शरीर की सम्पूर्ण ऊर्जा पृथ्वी में चली जायेगी। जब कि पृथ्वी में भी एक विशेष ऊर्जा होती है - अब दोनो ऊर्जा आपसमें टकरायेगी तो निश्चित ही क्लेश या रोग उत्पन्न होगा। यदि आसन रुपी आवरण से उसे रोका जाय तो वह ऊर्जा शरीर में ही रहेगी और शरीर स्वस्थ एवं मन प्रफुल्लित होगा। इसीलिये हमारे ऋषि लोग मस्तक पर पगड़ी या वस्त्र तथा नीचे बैठने के लिये आसन का उपयोग करते थे।

अपने संतो ने आसन के विषय में बहुत कुछ संशोधन किया है। उत्तम आसनों के माध्यम से उत्तम फलकी प्राप्ति होती है। निषेधकिये आसनों से या मात्र पृत्वी पर बैठकर जप-तप करने से अनिष्ट की प्राप्ति का निरुपण किया गया है। यदि पूजा-पाठ करने के बाद भी मानसिक शान्ति नहीं मिलती है तो निश्चित रुप से यह समझना चाहिये कि बैठने के आसन की व्यवस्था सही नहीं है।

अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के ५१ वें श्लोक में लिखा है कि "उपविश्य ततः शुद्धः आसने शुचि भूतले" अर्थात् शुद्ध आसन पर तथा पवित्र भूमि पर बैठकर जप तप करना चाहिये। भगवान श्रीकृष्णने श्रीमद् भगवद्गीता (६-११) में कहा है कि पवित्र स्थान में आसन बिछाकर जप-तप करना चाहिये जो अधिक ऊँचा या अधिकनीचा न हो श्रेष्ठ आसन के विषय में कितने विद्वानों का मत है कि लकडी का पीठासन २४ x १६ अंगुल लम्ब चौरस तथा अंगुल ऊंचा होना चाहिये। वस्त्रादि का आसन दो हाथ लम्बा तथा डेढ हाथ चौड़ा होना चाहिये। आसन इस तरह का होना चाहिये कि शरीर जमीन से स्पर्श न करे। पूजा के पीठ स्थान से अपना आसन नीचे होना चाहिये। यदि शारीरिक पीड़ा के कारण कुर्सी पर बैठना पड़े, तो भगवान के पूजा का स्थान उसी प्रमाण में ऊचा होना चाहिये।

प्रमाणित आसन में - दर्भ, गरमशाल, कम्बल, मृगचर्म, व्यार्धचर्म, रेशमी वस्त्र, सूत का वस्त्र, शमी कदम्ब, वरुण, खेर, इत्यादि का उपयोग करना चाहिये। निषेधआसन - लोहा, कांसा, सीसा, जिस में खीला मारा गया हो ऐसा पीढा, वांस, पत्थर, मिट्टी, पत्ता, गोबर (सूखा) पीपल का पीढा, जिसमें छिद्र हो ऐसे आसन वर्जित है। पूत्रवान गृहस्थ मृगचर्म का उपयोग न करें।

योगसूत्र में भगवान व्यासजी ने लिखा है कि -

निषेधआसनों का उपयोग करने से - जैसे वांस के आसन का उपयोग करने से दरिद्रता आती है। पत्थर के आसन से व्याधि, छिद्रवाले टूटे आसन से दुर्भाग्य, तृण के आसन से धन-यशकी हानि आसन के विना जमीन पर बैठकर जपादिक करने से रोग तथा कष्ट की प्राप्ति

(पेईज नं. ६)

"जनमंगल अभियान"

– स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल अहमदाबाद के रजत जयंती महामहोत्सव २०१३ के उपलक्ष में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल अहमदाबाद द्वारा आयोजित "जनमंगल कंठस्थ अभियान" का प्रारंभ हो चुका है । स.गु. शतानंद स्वामी विरचित महाप्रतापी जनमंगल नामावली की महिमा तथा एक-एक भगवान के मंगलकारी नामका अर्थ, विस्तार, तथा महिमा समझाने के यह एक उत्तम अवसर है । जनमंगल नामावली का विषय में इतना स्पष्ट है कि वह सर्वशास्त्रों का सार रुप मोक्ष का मार्ग है।

सुखकारी, सर्व मनुष्यों के कल्याणरुपी स्त्रोत का जप करने से जन्म सार्थक हो जाएगा । इस नामावली का पाठ करने वाले को सत्संगि जीवन के पाठ करने के बराबर फल प्राप्त होता है।

एकबार भगवान श्री स्वामिनारायणने स.गु. शतानंद स्वामी को आज्ञा की, वे ऐसे शास्त्र की रचना करें की उसमें हमारे जन्म से लेकर समस्त लीलाओं का चरित्र हो, साथ ही साथ उसमें नियम, निश्चय तथा पक्ष का अद्‌भुत बंधारण हो । उसके बाद शतानंद स्वामीने श्रीजी महाराज की आज्ञा को शिरोधार्य करके अद्‌भुत शास्त्र की रचना की जिसमें पांच प्रकरण है, तीनसो साठ अध्याय तथा सत्तह हजार से भी अधिक श्लोक है। ऐसे सत्संगिजीवन की रचना की । सत्संगिजीवन शास्त्र का नित्य पाठ करने वाले भक्त के जीवन में कोई दुःख नहीं आता । परंतु स्वामी को विचार आया की, सामान्य रुप से यह मुश्किल है । नित्य सत्संगिजीवन शास्त्र का पाठ करने वाले को तो अपनी सारी प्रवृत्ति तथा व्यवहार बंधकर देना पड़ेगा । जो मुश्किल है । इस कारण स.गु. शतानंद स्वामीने श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र में से ही सर्व मंगल नामावलि नामक छोटे शास्त्र की रचना की । जिस में भगवान के १००८ कल्याणकारी नामों का समावेश किया गया है । परंतु सर्व मंगल नामावलि की रचना के बाद संतोष हुआ परंतु उन्हे यह मेहसूस हुआ कि २१ वी सदी के मनुष्य के पास कलयुग में सर्वमंगल नामावलि का पाठ करने का समय भी नहीं होगा यह सोचकर उन्होंने समस्त वेदों के सारांश जनमंगल स्तोत्र की रचना की जिस में भगवान के १०८ पवित्र नाम का समावेश किया गया है । परंतु उसमें भगवान के तीन प्रकार के नाम है । उसमें कुछ नाम भगवान के स्वरुप संबंधी है । दृष्टांत के रुप में "ॐ श्री उदाराय नमः" कुछ नाम कर्मानुबंधी है । जिसमें भगवान के कार्यो का उल्लेख किया गया है । "ॐ श्री पाखंडोच्छेदन पटवे नमः" । इस प्रकार जनमंगल स्तोत्र की रचना हुई ।

शास्त्र के अनुसार नित्य जनमंगल के ११ पाठ करने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है । जिस प्रकार स्नान से देह की शुद्धि होती है उसी प्रकार हृदय तथा मन की शुद्धि ज्ञान से होती है । प्रभु को प्रसन्न करने के लिए भक्त यज्ञ, महापूजा आदि सत्कर्म करता है, उस पूजा, यज्ञ में बैठने वाले को प्रथम शुद्धि करनी पड़ती है । धोती तथा उपवस्त्र पहनना पड़ता है । परंतु यह एक ऐसी भक्ति है जिसमें मात्र भगवान का नाम मात्र ही लेना है।

स्तोत्र के लाभ के विषय में तो स्वयं स.गु. शतानंद स्वामीने लिखा है कि,

"एतेत्संसेवमानानां पुरुषार्थ चतुष्टये ।

दुर्लभं नास्ति किमपि हरिकृष्ण प्रसादतः ॥
भूत प्रेतपिशाचानां डाकिनी ब्रह्मरक्षसाम् ।
योगिनानां तथा बालगृहादिनामुपद्रवः ॥

जो भक्ति श्रद्धापूर्वक इस स्तोत्र का श्रवण करता है सुनता है, उसके समस्त पापों का मूल से नाश हो जाता है। इस स्तोत्र के पाठ करने वाले को भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, ब्रह्मराक्षस आदि जैसे दुःख नाश हो जाते । ऐसा प्रतापी जनमंगल स्तोत्र है । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के १००० हजार युवान उसे कंठस्थ करके इसका नित्य पाठ करे ऐसे शुभ संकल्प के साथ "जनमंगल कंठस्थ अभियान" का आयोजन किया है।

मुख्य रुप से जो भक्तगण इस अभियान में जुड़ना चाहते हैं उनके लिए हर शनिवार जनमंगल कथा का आयोजन किया गया है । जिसमें एक शनिवार घाटलोड़िया विस्तार में तथा एक शनिवार बापुनगर विस्तार में सभा का स्थल निश्चित किया गया है। तारीख आपको श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, नारायणघाट, राणीप, नवावाडज, बापुनगर आदि मंदिरों में लगे बेनरों में निर्देषित की जाएगी । तो आप सभी लोग लाभ लेने पधारे ऐसी आशा है।

(अनु. पेईज नं. ४ से आगे)

होती है । प्लास्टिक पर बैठकर (चटाई, कारपेट इत्यादि) जपादिक करने से कष्ट होता है।

धरती पर सभी को रहने के लिये अलग-अलग घर भले क्यों न हो लेकिन पृथ्वी तो एक ही है। वह सभी को धारण करती है। वह जड़ नहीं है परंतु आधिदैविक रुप में गौ-माता हैं । जो भगवान विष्णु की पत्नी है । हम सभी भगवान की सन्तान हैं इसलिये पृथ्वी हमारी माता है । इसलिये सभी कार्यारम्भ से पूर्व पृथ्वी माता को प्रणाम करके आसन शुद्ध करना चाहिये ।

पूजा धर्म के अंत में आसन के नीचे पानी गिराकर तीनवार भूः भुवः, स्वः, कहकर जल को मस्तक में लगाना चाहिये । इसका मतलब आसन के नीचे से ऊर्जा अपने शरीर में आकर तन, मन, को प्रफुल्लित करती है।

अब विशेष सूचना यह कि पूजा-यज्ञ कर्म के बीच में उठने की आवश्यकता हो तो अथवा विराम के समय उठते समय आसन को मोड़ देना चाहिये । कारण यह कि इन्द्रादि देवता को पृथ्वी पर क्रम का अधिकार नहीं है, यहि आसन खुला रहेगा तो उस आसन पर बैठकर पूजा करके सम्पूर्ण फल को ले लेंगे, इस तरह आचार मयुख में वर्णित है।

हमारे आगामी उत्सवों की यादी

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-१५ ता. १५-७-२०११ शुक्रवार गुरु पूर्णिमा अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में हमारे सभी के धर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन तथा जेतलपुर मंदिर में उत्सव का आयोजन किया गया है।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-२ ता. १७-७-२०११ रविवार झुलोत्सव दर्शन का आरंभ ।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-१० ता. २५-७-२०११ सोमवार को भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १४ वाँ प्राकट्योत्सव अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ सानिध्यमें पूजनीय संत तथा हरिभक्तों की विशाल उपस्थिति में धूमधाम से मनाया जाएगा । समस्त सत्संग को इसका लाभ लेने के लिए भावपूर्ण आमंत्रण है।

- महंत स्वामी

सावन शुक्ल पक्ष-८ ता. ६-८-२०११ शनिवार श्री स्वामिनारायण मंदिर दिल्ली पाटोत्सव
सावन शुक्ल पक्ष-१५ ता. १३-८-२०११ शनिवार मुकुटोत्सव पूनम, रक्षा बंधन
सावन कृष्ण पक्ष-५ ता. १९-८-२०११ शुक्रवार को स्वामिनारायण मंदिर जयपुर (राजस्थान) पाटोत्सव

भूज की व्रजभाषा पाठशाला के अंतिम आचार्य श्री शंभुदानजी का धर्मधुरंधर पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजने सम्मान किया

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

कच्छ राज्य का उद्‌भव तथा सामाजिक, धार्मिक तथा राजकीय व्यवस्था तथा राज्यवंश तथा राजाओंको प्रजाहित करने के किए जानकारी राजकवि श्री शंभुदानजी ईश्वरदानजी रत्नु के ''कच्छ दर्शन'' द्वारा प्राप्त होती है। उन्होंने लिखा है कि श्रीजी महाराजने कच्छ के पाटनगर भुज में स्वयं श्री नरनारायणदेव की मूर्तिओं को स्थापित किया है। उस समय १८७९ के वैशाख शुक्लपक्ष-५ के दिन इस मंदिर के लिए बगीचे की जमीन तथा संवत १९१६ के कार्तिक शुक्लपक्ष-११ के दिन कुएँ को महाराजश्री देशलजी दूसरे तथा उनकी धर्मांगना महारानी बाईजीबाई वाघेलीने आचार्य महारजश्री अयोध्याप्रसादजी को अर्पण किया था। संवत १९२२ के आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन श्री नरनारायणदेव के मंदिर में चांदी की वस्तुएँ अर्पण की थी।

राजकविवर शंभुदानजी किस प्रकार सत्संग के योग में आये तथा श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी तथा श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कृपापात्र बने उसका संपूर्ण यश उन्होंने अपने सद्‌गुरुवर्य श्री बालमुकुंददासजी स्वामी के जो ब्रह्मानंद स्वामी की गुरुपरंपरा में आते हैं। वर्तमान में ८७ वर्ष के ज्ञान वृद्ध पू. स.गु. ध्यानी स्वामी श्री हरिस्वरुपदासजी के गुरुवर्य है उनको भी प्रदान किया है। कविवर लिखते हैं कि, ''श्री बालमुकुंददासजी स्वामी मूली से भूज मंदिर में आकर रहने लगे। वे पूर्वाश्रम में लोहाणा ज्ञाति के थे। पिताश्री का नाम नथुभाई माता का नाम देवकी था। साणंद तालुका के नलकांठा के गाँव कुंडल के निवासी थे। उनका जन्म कार्तिक शुक्लपक्ष-११ को हुआ था जन्मदिन पर अहमदाबाद गादी के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से संत दीक्षा ग्रहण की थी। अपने धर्मगुरु मूली के पू. सनातनदासजी के पास से धर्मग्रंथो-शास्त्रों का अभ्यास करके निपुण हो गये थे। सन २००१ में मूली से भुज मंदिर में पधारे।

कविवर को पू. बालमुकुंददासजी के ऐश्वर्य के हुए अनुभव के बारे में लिखते है कि, ''उस समय बागीचे खाने में मेरी नोकरी थी। राज्य के संपूर्ण बाग-बगीचों के देखरेख मुझे ही करनी पड़ती थी। सामत्रा गाँव से तीन चार माईल दूर श्री प्रागसर गार्डन में गन्ने की फसल उत्तम हुई थी। उसमें से गुड़ बनाने का कोन्ट्राक्ट कानजीभाई (पापा) को सौंपा गया। उस प्रसंग पर उन्होने भूज के संतो को प्रेमपूर्वक आमंत्रित किया। वहाँ पू. बालमुकुंददासजी स्वामी पधारे थे। वहाँ मुझे भी जाना था। स्वामीजीने मुझसे वहाँ एक छंद सुनाने के लिए कहा। फिर स्वयं स्वामीजीने ही छंद सुनाये भी समजाये भी। मैं आश्चर्य चकित हो गया। सभा लंबी चली। मुझे वहाँ रुकना था। लेकिन कुछ लोग मुझे भुज

से बुलाने आ गये, कहा कि आपका छोटा पुत्र पुष्पदान अधिक बिमार हो गया है । सारी जानकारी मैं ने पू. स्वामीजी को देकर उनसे आज्ञा मांगी । तब बालमुकुंददासजी ने कहा, "भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से आपका पुत्र शीध्र ही स्वस्थ हो जायेगा । तब आप भुज मंदिर आना और मुझसे मिलना ।" प्रातः मैं भुज पहुँचा । पुष्पदान की गंभीर हालत क्षणभर में ही ठीक हो गयी ।

उसके बाद पू. स्वामीजी के पास जाने का विचार किया । सन १९९५-१९९७ में मेरे पडोश में हलवद के सांख्ययोगी मोतीबाई रहने के लिए आयी थी । मेरी धर्मपत्नी उनके पास सत्संगी हो गयी । एक समय भगवान के दर्शन करके मैं स्वामीजी के पास बैठा तो स्वामीजी ने मुझे कंठी पहनाकर सत्संगी होने के लिए कहा । मैंने नियम पालन मे असमर्थता दिखाई । तो स्वामीजीने कहा गुरु के रुप में मैं अपना समस्त पुण्य तुम्हें देता हूँ । तुम्हारी रक्षा करेंगे । देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पास गुरुमंत्र लिया । उसके बाद मैं मंदिर में भजन गाने लगा लोग मुझे सत्संगी कवि के रुप में जानने लगे । लोगों ने मुझे तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के संग में आने का अभिप्राय दिया । सन १९५२ में जब में अहमदाबाद गया था तब देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने मुझे अपने बंगले में ही रखा था । उस समय हमारे बीच में व्रजभाषा के बारे में चर्चा होती थी ।

सद्गुरु स्वामीश्री बालमुकुंददासजी सं. २००१ से सं. २०१७ तक भुज मंदिर में ही रहकर अनेक लोगों को सत्संगी बनाया । सं. २०१७ के कार्तिक कृष्णपक्ष-९ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरधाम निवासी हुए । उनके शिष्य पूज्य ध्यानी स्वामी श्रीहरिस्वरुपदासजी ने मेरे पुत्र पुष्पदान को आशीर्वाद दिया जिसके कारण आज वेह एक उत्तम वकील है । तथा भारत की संसद में चार टर्म सांसद के रुप में चुना गया है ।

सन १९७७ में मोरजर (कच्छ) गाँव में मेरा तथा मेरे स्वाध्यायी गुरुभाईओं का सन्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया । तब प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने जो संदेश भेजा वह इस प्रकार है ।

यह जानकर हर्ष हो रहा है कि आपकी समिति के द्वारा महारावश्री लखपतजी स्थापित भुजनगर स्थित अति पुरातन व्रजभाषा पाठशाला के भूतपूर्व स्नानक स्नातक प्राप्त चारण विद्वानों का सन्मान समारंभ निकट के भविष्य में किया जा रहा है । उन सन्माननीय विद्वानों में कच्छ राज्य के राजकवि आचार्यश्री शंभुदानजी ईश्वरदानजी रत्नु कविराज का समावेश विशेष रसप्रद रहा । चारण विद्वान चिरकाल से अपनी अनोखी कृतियो के माध्यम से भारत वर्ष के गौरव का संवर्धन करते आये है, अंतः इन गुणी व्यक्तियों के गुणों की पूजाकर वह प्रशंसनीय प्रयास आप लोगों की गुणग्राहीता का परिचायक सिद्ध होता है । प्रकट पुरुषोत्तम कृपामय श्री स्वामिनारायण भगवान से प्रार्थना है कि आप लोगो का यह शुभ आयोजन सर्वदा सफल बने । (आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी पांडे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति श्री स्वामिनारायण बाग अहमदाबाद-६)

साभार स्विकार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हरिद्वार मंदिर में शास्त्री हरिजीवनदासजी द्वारा लिखित "आनंद की हेली" पुस्तिका का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से विमोचन किया गया । इस पुस्तिका में श्रीहरि के मजेदार तथा आनंददायी चरित्रों का संग्रह किया गया है । बालकों के लिए प्राचीन वार्ताओं का संग्रह "चालो वार्ताओना मेला मां" भाग-६ खाण मंदिर में प.पू. महाराजश्री के हाथों से विमोचन किया गया था ।

पू. बापजी - चित्रकार का भी चित्र बना दें ऐसे चित्रकार है

- प्रफुल खरसाणी

एक बार एक स्कूल में शिक्षकने विद्यार्थी से पूछा कि बनाना की स्पेलींग क्या है तो विद्यार्थीने खड़े होकर कहा कि, "मुझे स्पेलींग तो आती है लेकिन कहाँ अटकना है यह मुझे नहीं आता । (वी.ए.एन.ए.एन.ए.एन.ए....) ऐसा बहुत लोगं के साथ होता है। कहाँ रुकना है जीवन में पता ही नहीं होता। परंतु हमारे पू. बड़े महाराजश्री बापजी को बनाना की स्पेलिंग आती है। पू. बापजी जब पद पर आरुढ थे तब संप्रदाय में अत्यंत व्यस्तता के उपरांत भी अपने कलाप्रेम को उन्होंने हंमेशा महत्व दिया । उनके फोटोग्राफी तथा संगीत प्रेम के विषय में तो सब जानते ही है परंतु बापुजी को चित्र बनाने का भी शौख है। चित्र बनाने का समय अपनी व्यस्त दैनिकचर्या में से निकाल लेते थे। सभा में बैठे-बैठे किसी को पता ना चले उस तरफ किसी भी सत्संगी का स्केच बना लेते थे। बाद में अपने बचपन के परम मित्र प्रसिद्ध चित्रकार श्री अमीतभाई अंबालाल को दिखाते थे। आज से छ वर्ष पहले (विवाद में पड़ने से पहले) प्रसिद्ध चित्रकार एम. एफ. हुसेन श्री अमीतभाई के सुपुत्र अनुज के शादी समारोह में हाजरी देने उपस्थित थे । पू. बापजी भी मित्र के आयोजन में हाजर थे। बापजी को एक विचार आया कि यह व्यक्ति अनेक चित्रों को बनाया है परंतु उसका चित्र मैं बनाऊ ? परंतु कोई लग्न समारंभ में चित्र बनाने का साधन तो होगा नहीं। बापजीने स्वयं ही हुसेन से पेन मांग ली और

भोजन समारंभ में उपयोग किए जाने वाले पेपर नेपकीन पर हुसेन का साईड फेस कुछ ही मिनटो में बना दिया। हुसेन के मुख से निकल गया "वाह क्या बात है।" इतना ही नहीं हुसेन ने पेपर पर अंग्रेजी तथा गुजराती में ओटोग्राफ भी कर दिया। छोटी से छोटी वस्तु का जतन करने की बापजी की आदत के कारण आज भी वह नेपकीन सही सलामत है। वर्तमान में हुसेन की तो मृत्यु हो गयी लेकिन वह पेपर नेपकीन आज भी श्री स्वामिनारायण म्युझियम में आचार्य परंपरावाले हॉल में बापजी के कोर्नर में सदैव स्थापित है। म्युझियम की मुलाकात लें तब उसे अवश्य देखना । जयश्री स्वामिनारायण

हरिभक्तों को खास सूचना

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के हरिभक्तों तथा कोठारीश्री को खास सूचना दी जाती है कि, संतो को धर्मादा या कोई भी फंड दिया जाय तो उनके पास प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का लेखित आज्ञा पत्र होना आवश्यक है तभी वे यह सब देने के पात्र है। आज्ञापत्र के बिना कोई भी फंड या धर्मादा देना नहीं। आज्ञा से - महंतश्री स्वामी

टोरडा सारंगपुर एस.टी. बस सेवा चालु की गई

स.गु. गोपालानंद स्वामी के जन्म स्थान टोरड़ा से सारंगपुर (हनुमानजी) एस.टी. बस सेवा चालु की गई। सुबह ९-०० बजे टोरडा से चलती है। रात में ९-३० बजे वापस सारंगपुर से टोरडा जाती है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में जून, २००१ में लिखवाये गए श्री नरनारायणदेव के मूर्ति की अभिषेक की सूचि

ता. ५, श्री नरेशभाई वाडीलाल ठक्कर, अहमदाबाद
श्री वाडीलाल नानजीभाई ठक्कर, अहमदाबाद
श्री रीकीनभाई नरेशभाई ठक्कर, अहमदाबाद
ता. १२, पार्षद कान्ति भगत गुरु बालस्वरुपदासजी,
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद
ता. १७, श्री कचराभाई सांकाभाई
श्री रामाभाई सांकाभाई
श्री कौशिकभाई कचराभाई पटेल - अरोडा, ईडर
ता. १९, सभी सत्संगी भाई तथा बहन
श्री स्वामिनारायण मंदिर, वासणा
ह. राजुभाई ललीतभाई ठक्कर
ता. २६, श्री अमथालाल करशनदास मोदी
सेवंतीभाई तथा नारणभाई
हे. उदयनभाई महाराजा
ता. २९, श्री बीपीनभाई डी. सोनी अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम निभाव भेट योजना अंतर्गत दर महिने नियमित रुप से भेट लिखवाने वाले दाताश्रीओं की सूचि

महेशभाई एच. पटेल (लालोड़ा) वर्तमान वापी रु। ५०००/-
माणेकबहन जीवालाल चौहाण ह. ईन्दुबहन राकेशभाई,
मौलीन चंदुभाई रु। ५०००/-
घनश्याम एन्जी. ईन्डस्ट्रीझ बोपल, अहमदाबाद रु। ५०००/-
शशिकान्तभाई पटेल ऊँझा रु। ५०००/-

अभिप्राय

I had an excellent opportunity to visit our new museum on my recent visit to Amdavad.
to say that I was impressed would be the understatement of my life.
I was flabbergasted and astonished to see the quality of display.
and I am not talking about the exhibits. they are superb but that is because of our faith and reverence to Swaminarayan Bhagwan.
I am talking about the way the exhibits were displayed and the whole ambiance of the museum.
i have seen the best of the museums in the UK, USA and France, so i know the quality I am comparing our museum with.
Our museum beats almost all of them in the way the exhibits are displayed and layered.
i had a chance to visit the museum many times while iot was being constructed, so I was aware of the scale and quality of the infrastructure.
however, when I saw the completed structure, I was overwhelmed by the scale and grandeur of it.
this is beyond my imagination.
never did I think that we could better the best in the world.

You and your team of saints and Haribhaktos have proved beyond point that we have the dedication and expertise to take on the world.

once again, I would like to congratulate you for presenting the world class masterpiece to our sampraday.

Jay swaminarayan
from
Jethalal Savani (Kera) (London)

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७

प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com ● email:swaminarayanmuseum@gmail.com

आनंद की लहर

करणीबा का घी

- शा. हरिजीवनदास स्वामी (हिंमतनगर महंत(

कच्छ का धमड़का गाँव श्रीहरि को अति प्रिय था। वहाँ के रायधणजी, रामसंगजी आदि भाई लोग तथा करणीबा जैसी बाई अति प्रेमी भक्त थे। वहाँ पधारकर महाराजने कई लीलाए भी की है।

एकबार धमड़का गाँव में बिराजमान श्रीहरिने करणीबा को कहा कि, करणीबा ! हमने सुना है कि आपके वहाँ घी बहुत अच्छा होता है। करणीबा ने कहा, हाँ महाराज ! सब आपकी कृपा है। मेरे पास आठ अति उत्तम दूधदेनेवाली भैंसो हैं। जिनका मख्खन अति उत्तम होता है। उसी में से घी बनाती हूँ। एक बड़ी परात में घी भरके उन्होंने श्रीजी महाराज को दिया परात हाथ में लेकर श्रीजी महाराजने कहा घी तो बहुत ही उत्तम है। आपने यह घी हमकों पीने के लिए दिया है ? हा महाराज! आप प्रसन्न होकर पी जाईये। करणीबाने उत्तर दिया।

श्रीजी महाराजने परात को मुख से लगाकर पूरा घी पी गये। करणीबाने परात को उगली से छूकर देखा। उसमें बिलकुल चिकनापन नहीं रह गया था। करणीबा ने कहा, कृष्णावतार में पूतना कृष्ण को अपना करवाने आयी थी। तब बालकृष्ण ने प्राण के साथ दूधपान किया था। उसी प्रकार आप सारा घी पी गये। महाराजने कहा आपने पीने के लिये दिया तो हम पी गये।

करणीबाने कहा, जरा प्रसादी तो रहने देनी थी। यह सुनकर महाराज बहुत हसे।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभ्य बनने हेतु

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सभ्यों को सूचित किया जाता है कि अपना पता बदलने हेतु, अंक न मिलने के विषय में अथवा अन्य कोई भी श्री स्वामिनारायण मासिक के कार्य हेतु प्रात १०-०० से ५-०० बजे तक संपर्क कर सकते हैं। प्रात: या रात्रि में फोन करें नही। पता बदलने के लिए महिने की २५ तारीख के पहले भेज देना आवश्यक है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर बामरोली (मध्यप्रदेश) पाटोत्सव के तारीख में हुआ बदलाव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर बामरोली (मध्यप्रदेश) का वार्षिक पाटोत्सव ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-५ की जगह अब सदैव हर वर्ष के कार्तिक कृष्णपक्ष-५ (पंचमी) के दिन मनाया जाएगा। सभी हरिभक्तों को यह सूचित किया जाता है।

श्री स्वामिनारायण अंक न प्राप्त करने की फरियाद के विषय में

अपने श्री स्वामिनारायण मासिक हर महिने की ११ तारीख को नियमित रुप से पोस्ट किया जाता है। इसके बावजूद यदि किसी सभ्य को अंक नही मिलता है तो २० तारीख को अपनी स्थानिक पोस्ट में जाँच करने के बाद सभ्य नंबर के साथ जानकारी दें। सभ्य नंबर के अलावा फरियाद मंजूर नहीं की जायेगी। स्टोक में अंक होगा तो फिर से भेज दिया जायेगा।

श्री स्वामिनारायण मासिक में सत्संग समाचार तथा फोटो भेजने वाले हरिभक्तों के लिए सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक के वर्तमान में हजारो की संख्या में वाचक है। अंक नियमित नियत तारीख को प्रकाशीत करके पोस्ट किया जाता है। इन अंको में प्रकाशित सत्संग समाचार तथा तस्वीरे हर महिने की २५ तारीख तक भेज दिये जाए। समाचार भी छोटा तथा मुद्दासर होना चाहिए। उसका खास ध्यान रखें। २५ तारीख के बाद प्राप्त समाचार को अंक में प्रसिद्ध नही किया जाएगा।

सत्संग सुरभि

"हमारा कार्य ही जीवों को बंधन में से मुक्त करवाना है"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अहमदाबाद)

धूमते-धूमते नीलकंठवर्णीने खंभात की खाड़ी के किनारे धनका तीर्थ में रात व्यतीत किये। चातुर्मास चल रहा था । स्नान करने आयी जनमेदनी को दर्शन देकर नीलकंठवर्णी शिकोतर के किनारे पधारे । खंभात की खाड़ी के मुख के पास मही तथा साबरमती दोनो नदियाँ समुद्र मे मिलती है । आसपास के गाँव के कुछ माछीमार मछलियों का शिकार करके अपना गुजरान चलाते थें।

ऐसे बड़गाँव का लाखों नामक कोली पूरे दिन की मछली एकत्रित करके अपनी टोकरी तैयार कर रहा था। दिन ढलने में अभी थोड़ा समय बाकी था। आराम करने हेतु लाखा तमाकु भरके अपना हुक्का जलाया। जैसे पहला घूंट लेने गया उसी समय नीलकंठवर्णी उसके सामने पधारे।

वर्णी का अनुपम रुप देखकर लाखा की आँखो में चमक आ गई। हाथ में से हुक्का सरक गया। अधोरी जैसे गंदे बाल, नखशिख काला-कोयले जैसा शरीर, दयनीय वस्त्रभूषा, यह सब कुछ लाखा के पाप कर्मो की गवाही थी।

नीलकंठ महाप्रभुने उस पर करुणाभरी दृष्टि डाली । लाखा को जैसे कोई अगम्य शांति का अनुभव हुआ। पास में पड़ी पत्तर् शीला पर मृगचर्म बिछाकर नीलकंठ बैठे । लाखा के साथ जैसे कोई पूर्व की प्रित हो उस प्रकार प्रेमपूर्वक उसका नाम पता पूछा।

"महाराज ! मैं बडगाँव का कोली हूँ। और पाप का धंधा करता हूँ।" पापके धंधे की ऐसी निखालसता से स्वीकार्य करने वाले को देखकर प्रसन्न हो गये। वर्णी बोले "भाई ! कोली तो छोटी जातियों में सबसे श्रेष्ठ जाती है। तुम स्वयं को अधम नीच क्यों समझते हो ?"

"महाराज ! मुझे लोग अधम-नीच समझते हैं। और मैं ऐसा पाप कृत्य करता हूँ इस कारण मुझे पापी भी समझते हैं।

"नीलकंठ हँस पड़े। "लाखा, तु पाप करता है, इसकी तुझे समझ है। तो उस पाप को छोड़ क्यों नही देते ?"

"प्रभु ! हमारी जात में ऐसा ज्ञान किसको होगा ? जो बाप-दादा की विरासत में मिलेगा उसीको आगे बढ़ाकर कुटुंब का पोषण करता हूँ।"वर्णीने कहा "इस पाप में से तुझे किस जनम में मुक्ति मिलेगी ? जीव मात्र की रक्षा करने वालें भगवान है। जन्म देकर पोषण करनार भी वही है। क्या तुम्हारे गाँव में सभी यही कार्य करते हैं ?

"नहीं ! यह तो हमारे कर्म ही ऐसे है।

"चाहे जैसे कर्म हो तो भी भगवान ही भाग्य बनातें है। भगवान की शरण स्वीकार्य कर। पाप का पस्तावा कर, प्रार्थना कर वे तुम्हें अवश्य तार देंगे।

बाल ब्रह्मचारी के इन शब्दों का लाखा पर असर हो गया। उसके पूर्व के संस्कार जाग उठे। वर्णीराज, लाखा की बदलती हुई केमेस्ट्री पर बारी की से देखते हैं। पापी जीव का कलेवर बदल गया।

"लाखा ! मरने वाले से जीवनदान देने वाला महान है। तुं तो मानवी है। सुदंर हाथ-पैर, आँख, नाक-कान, वाणी जैसी इन्द्रियाँ मिली है । सृष्टि के जीव तो निर्दोष है । भगवान की इस सृष्टि में कही दोष नहीं है। दोष तो तुम्हारे जैसे मानवी उत्पन्न करते हैं। जाने-अन्जाने में जीवों की हत्या करते हैं। न खाने का खाते हैं। सुख-लिलाय में मग्न रहते हैं। मौत तो तुम्हारे सीर पर नाचती ही है। जब मौत आयेगी तब चाह कर भी उसमें से छूट नहीं पाओगे। इश्वर जब तुम्हारे कर्मो का हिसाब माँगेगा तब तुम क्या उत्तर दोगे। भगवान का उपकार मानो की उन्होंने तुम्हारे लिए खाना-पानी, दवा-प्रकाश, सुंदर बुद्धि प्रदान की है । करनी है तो किसी की भी सहायता कर, परंतु इन निर्दोष जीवों की हत्या करने का अधिकार तुम्हें किसने दिया ?

वर्णी के एक-एक शब्दों से लाखा का अंतर द्रवित हो उठा। आँखो से अश्रुधारा बहने लगी। जिस प्रकार लकड़ी गिरती है उसी प्रकार नीलकंठ वर्णी के चरणों में गिर पड़ा।

"महाराज ! मुझे माफ कर दीजिए। इस पापी जीव का उद्धार करीए।" वर्णीने चोटवार विशेष बात करते हुए कहा, "लाखा ! जीवमात्र तो कर्म का बंधन होता है। तुं अभी कुकर्म-पाप करते प्रसन्न होगा लेकिन अगले जनममें यही एक-एक जीव तुम्हारे शरीर को नोच डालेंगे, जीतेजी नरक की वेदना सहन करनी पड़ेगी।"

नीलकंठ वर्णी के शब्दों का प्रभाव कोली पर हो रहा था। संध्या का समय हो रहा था और दूसरी तरफ वर्णीराज का तेज लाखा के हृदय को प्रकाशित कर रहा था। लाखा ने दृढ़ता से कहा, "ब्रह्मचारीजी ! आज से मैं कोई जीव हिंसा नही करुंगा। परंतु यह जो मरी हुई मछलियाँ हैं उनका मैं क्या करु।"

वर्णीने कहा, "इस टोकरी को किनारे पर रख दो।" और अपनी हवेली में जल भर् कर मछलियों पर छिड़कने लगे । एक-एक करके सारी मछलिया कूद-कूद कर साबरमती की पानी में अदृश्य हो गयी।

लाखा कोली इस दृश्य को देखकर आश्चर्य चकित हो गया। "जरुर यह कोई बड़े महापुरुष है। और मुझे इसमें से तारने के लिए ब्रह्मचारी वेष धारण करके पधारे है। उसने कहा, "हे ब्रह्मचारीजी मुझे इस काम में से मुक्त करवाइए। में आपका उपकार कभी नहीं भूलुंगा।"

वर्णीने कहा, "हमारा कार्य ही जीवों को बंधन में से मुक्त करवाना है। तुम हाथ में जल रखकर वचन दो कि, "आज के बाद जीव हिंसा नहीं करोंगे। किसी को भी पीड़ा हो ऐसा वर्तन नहीं करोंगे।"

लाखा ने नियम धारण किया । वर्णी के चरणों में मस्तक रखकर बोला, "प्रभु ! आज आपने मुझे यथार्थ मानव बनाया है। मैं मानव का धर्म भूल गया था।

नीलकंठ वर्णीने कहा, "शास्त्र अनुसार धर्म का आचरण किया जाय तो कभी भी दु:ख नहीं आता।"

लाखाने कहा, "महाराज, मुझे शास्त्र का तो कोई ज्ञान ही नहीं है। आप मुझे जो नियम दिये है उन्हें मैं जब तक जिवीत रहुँगा तब तक उसका पालन करता रहुँगा।"

"तो इसी प्रकार जैसे तुम मांस नहीं खा सकते, तुम तमाकु भी नहीं खा-पी सकते।"

"अब तो सब कुछ खत्म हो गया इतना कहकर उसने हुक्के को पत्थर से मार कर तोड़ दिया।

वर्णीराज लाखा की शूरवीरता को देखकर प्रसन्न हो गये। लाखाने कहा, "महाराज शाम हो गई है। आप कहाँ जाओगे ? यह मही-साबरमती नदी का संगम है। वांस भी डूब जाए इतना गहरा पानी बहता है । सामने किनारे झाड़ीओं में बाघ-चित्ते रहते हैं। कल पानी उतर जाये तब चले जाना। आज मेरे गाँव बडगाँव पधारिये वहाँ से दूसरे रास्ते से धोलेरा तक छोड़ दूंगा।"

परंतु वर्णी नहीं माने। साबरमती के पानी में वे उतर गये। लाखाने पूछा, "आप किनारे पहुँच गये है यह मुझे कैसे ज्ञात होगा ?" वर्णीने कहा, "सामने पहुँचकर में अपने मृगचर्म को ऊँचा करके हवा में धुमाऊँगा उससे तुम जान लेना।"

इतना कहकर एक ही बार में नदी के पानी को दो हिस्सो में चीरते हुए सामने तट् पर पहुँच गये। वर्णी तैर कर गये या पानी पर चल कर यह लाखा के समझ में ही नहीं आया।

लाखाने सामने किनारे पर नजर की। थोड़े समय में ही मृगचर्म को हवा में ऊछालकर स्वयं सुरक्षित है यह संदेश नीलकंठ ने दे दिया । वर्णीराज के देदिप्यमान तेज में मृगचर्म स्पष्ट दिखाई दे रही थी । नीलकंठ वर्णी का मधुर हास्य का लाखा अनुभव कर पा रहा था। थोड़ीक्षण तो यह ख्याल आया की मैं भी पानी मे तैर कर सामने तट पर पहुँच जाउ। सदाय उन्हीं के साथ रहुँ। परंतु हिंमत छूट गई। पैर आगे-पीछे होने लगे।

संगम का पानी स्थिर हो गया । पंखी अपने अपने धोंसले में छिप गये। भवरो ने अपनी ध्वनि से वातावरण को सूमसाम बना दिया।

"मेरे प्रभु क्षणभर में ओझल हो गए ?" लाखा कोली खिन्न हृदय के साथ नीलकंठ वर्णी की संपूर्ण मूर्ति तथा उपदेश का चिंतन करते हुए अपने घर की ओर चल पड़ा। तभी एक चमत्कार हुआ। लाखा को आभास हुआ की वह स्वयं अकेला नहीं है आकाश में से कोई मूर्ति तैरती-तैरती उसके साथ चल रही है और कह रही है कि, लाखा तुम डरो मत, मैं सदैव तुम्हारे साथ हुँ, ऐसा आभास हुआ।" लाखा का हृदय पुन: हर्षोल्लास से भर गया।

भगवान श्री स्वामिनारायण का चार घड़ी का सहवास प्राप्तकर के एक पापी का समस्त अंतर बदल गया । वर्णीराज ने उसे अभयदान दिया था। जीवन पर्यंत लाखाने श्रीहरि के वचनो को निभाया। तथा उन्हे पूजता रहा।

उसके अंतिम समय में वही मृगचर्म वाले हाथ में दंड-कमंडलु धारण किए हुए नीलकंठवर्णी ने उसे दर्शन दिये और वह परमगति को प्राप्त हुआ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

साधना से संगीत बनता है

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

एक गवैया बहुत सुदंर वीणा बजाता था । इतना सुंदर बजाता की लोग डोल जाते । कीसी धनिक ने पूछा "ऐसी वीणा कहाँ मिलेगी ?" कलाकार ने पता दिया और किंमत भी बता दी । वह धनिक उस पते पर गया और वीणा खरीद ली, और सुंदर रुप से व्यवस्थित करके रखी । कोई भी मित्र-स्नेही आते वीणा को देख खुश होते थे । उनके बंगले पर आये परम मित्रने उन्हे कहा "वीणा आप बजाते है ?" धनिकने वीणा हाथमें लेकर बजाने का प्रयास किया, उसमें से मधुर शब्द के स्थान पर कर्कस ध्वनि निकलने लगी । इससे धनिक नाराज हुआ । और सोचने लगा वीणा में कुछ गडबड है, कलाकार ने मुझे गलत पता दिया लगता है । और तुरंत वो वीणा बजाने वाले कलाकार के पास पहुंच गये और बोले आप के दिए हुए पते से मैं वीणा खरीद लाया किंतु आप जैसी नहीं बजती कर्कस ध्वनि उत्पन्न करती है ।

तब वीणावादक कलाकारने कहा, शेठजी ! आपके पास खूब अपार संपति है, संपति से खरिया खरीदी जाती है नींद नहीं, भोजन खरीद सकते है अपार नींद नहीं, इंसान खरीद सकते है वफादारी नहीं, वीणा तो खरीद सकते है किंतु संगीत नहीं । संगीत तो साधना से होता है । मैं पीछले २० वर्ष से संगीतकी साधना कर रहा हूँ तब इस स्थान पर हूँ । आप हिंमत हारे बगैर साधना शुरु करे, मधुर संगीत जरुर प्रकट होगा । साधन छोटा हो या बड़ा साधना साधना के बगैर सिद्धी नहीं मिलेगी । आप गुरु से तालीम ले और साधना करे तो सिद्धी प्राप्त कर सकते है ।

जो मनुष्य अपना समग्र जीवन आलस और प्रमाद में बिताया हो वो मनुष्य अचानक उद्यमी बन जाये वह असंभव है । एक खर्चीला मनुष्य अचानक कंजूस बन जाये और बुरा मनुष्य सद्‌गुणी बन जाये यह बहुत कम संभव है और ऐसा करने के सदैव प्रयत्नशील रहना पड़ता है ।

प्रभु की दी हुई जिंदगी एक वीणा है । उसका मालिक बनने से संगीत नही आता । किंतु इतनी साधना करो कि जीवन मेंसे संगीत प्रकटेगा । साधना का नाम है संयम और साथमें सद्‌भाव, संतो का सत्संग, इष्टदेव की भक्ति से जीवन में से सुमधुर संगीत निकलता है ।

ध्रुवजीने पांच वर्षकी उम्र में ही कठोर साधना करके अद्‌भुद संगीत प्रकटाया । भक्त प्रहलादजीने सहन शक्ति से कठोर साधना करके सात वर्ष में संगीत की कठोर साधना की । स्वामिनारायण भगवान के हजारो संत और लाखो भक्त सदैव प्रतिकूल परिस्थिति से लड़कर प्रकट पुरुषोत्तम की उपासना कर सदैव साधना करते हैं । और इस साधना से अर्जित संगीत की ध्वनि अपने समाज को पवित्र बनाता है ।

मित्रो ! आप विद्याअभ्यास करते है तो एक बात कहने का मन होता है । छुट्टियाँ समाप्त हो गयी है आपका अध्ययन प्रारंभ होगा । अभ्यास एक साधना है । केवल पुस्तक खरीदने से या मंहगे कोचिंग से पढाई नहीं होती । विद्यादेवी सरस्वती को प्रसन्न करने के लिए विद्याकी कठोर साधना करनी पड़ती है । स्वामिनारायण भगवानने यही उपदेश दिया था कि जो महेनत नही करता कर्म नहीं करता उस पर भगवान की कृपा नहीं होती, इसलिए खूब मेहनत करो और आगे बढो किंतु जिंदगी के किसी भी मोड़ पर सत्संग तथा भक्ति से अलग नहीं होना ।

तीर्थधाममें गुस्सा क्यों आया ?

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

''छो तो एकने दिसो छो दोय, तेनो भेद जाणे जन कोई ञ

भगवान का नाम, गुण, चरित्र अपरंपार है । ऐसे अनंत, अपार परमात्मा स्वामिनारायण भगवान का एक नाम है । ''नरनारायण'', चलिए आज स्मरण करते है प्रभु का ये नाम कैसे रखा गया ।

आदि सतयुगकी कथा है । धर्म और मूर्ति, जिन्हे हम भक्ति कहते है । उनका सतयुगमें नाम मूर्ति था । धर्म और मूर्तिने खूब तप किया, देवताओं ने बारह हजार वर्ष तक तप किया । भगवान तो ''तपः प्रियाय'' है । धर्म तथा मूर्ति के तप से प्रसन्न हुए भगवानने वरदान मांगने को कहा, तब धर्म-भक्ति ने कहा आप हमारे पुत्र बने फिर भगवानने कहा मांगो इस प्रकार चार बार बोला आप हमारे पुत्र बने । भगवानने तथास्तु कहा । वो समय अलग था । शास्त्र के कथानुसार संकल्प से सृष्टि की वृद्धि होती थी ।

आदि सतयुग में संकल्प सृष्टि था । धर्म-भक्ति चार बार बोले और भगवानने तथास्तु कहा, भगवान चार रुप में उनके पास खड़े रहे, नर, नारायण, हरि और कृष्ण । उसमें भक्तो के हित के लिए नर और नारायण के रुप में सदैव बद्रीकाश्रम रहे ।

एक समय मरिच्यादिक ऋषि महर्षियोने भारत भरके सभी तीर्थो की यात्रा की किंतु पृथ्वी पर होने वाले अधर्म पाखंडको देखकर अत्यंत व्यथित हुए । पवित्र भारत भूमि के तीर्थो की अवदशा देव बद्रीकाश्रम श्री नरनारायणदेव के पास गये । श्री नरनारायणदेव के दर्शन कर ऋषि महर्षियोने उनके समस्त तीर्थो की हालत तथा धरती पर बढते अधर्म, कुसंग, पाखंड की चिंता व्यक्त की ।

उन ऋषि महर्षि की सभा चल रही थी तभी दुर्वासा ऋषि वहाँ आये, एक अजीब घटना हो गई, बद्रिकाश्रम में नरनारायण देव के तप की वजह से इतना पवित्र स्थान था कि सर्प और नेवला भी परस्पर शत्रुभाव नहीं रखते थे । किंतु दुर्वासाजी वहाँ क्रोधित होकर पहुंच गये यही क्रोध अजीब घटना है, दुर्वासा ऋषि सभा के किनारे आकर खडे हुए सभी महर्षि श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में तन्मय हो गये थे, जिससे पता ही नहीं चला की दुर्वासाजी उनके पीछे खड़े है । दुर्वासाजी के साथ होने वाला अनादर देखकर और क्रोधित हो गये । और श्राप देने लगे । जिसे श्राप देना हो वो कहीं पर दे देता है उसके लिए कोई स्थान निश्चित नहीं होता । प्रवचन करना हो तो माईक के पास आना पड़ता है । और श्राप देना हो तो कहीं से भी दे सकते हैं । जिस इन्सान को गाली देनी होती है वो घर में भी देता है और ओफिस में भी, मंदिर मैं भी देता है । दुर्वासाजी श्राप देने वाले थे, बद्रीकाश्रम जाकर सभा में श्राप दिया । मनुष्य जहाँ यात्रा करने जाता है वहाँ श्राप दिया । यहाँ बैठे सभी लोग उद्धत है, अभिमानी है मेरा सन्मान नहीं करते हैं । इसलिए कलयुग में जन्मलों और परेशान हो, श्रापका निमित नरनारायणदेव को भी बनाया ।

यहाँ शतानंद स्वामी का रहस्य उताकर कहते है । अक्षरधाम के अधिपति पुरुषोत्तम नारायण धरती पर छपैया गाँव में धर्म-भक्ति के घर प्रगट होने वाले थे । इसलिए नरनारायणदेव को निमित बनाया ।

नरनारायणदेवने धर्म-भक्ति को कहा ''आप चिंता न करे, असुरो से रक्षा करने के लिए हम आपके घर जन्म लेंगे ।''

भगवान बद्रीकाश्रम में दो स्वरुप में है और छपैया में प्रगट हुए तब एक ही थे और वही अक्षरधाम के अधिपति स्वामिनारायण भगवान जो नरनारायणदेव को निमित बनाकर प्रकट हुए इसलिए स्वामिनारायण भगवान का एक नाम ''नरनारायण नमः'' ऐसा शतानंद स्वामीने जनमंगल में लिखा तो बोलो ''श्री नरनारायणदेव की जय'' ।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में "कर्म के प्रकार का विस्तार से वर्णन"

- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

गीता में श्रीकृष्ण भगवान से अर्जुन ने पूछा कि कर्म तथा ज्ञान दोनों में से उत्तम क्या है ? तब श्री कृष्ण भगवानने कहा कि कर्म का त्याग करके कोई त्यागी हो नहीं सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को भौतिक प्रकृति से प्राप्त गुण के अनुसार विवश होकर कर्म करना ही पड़ता है। हमारे अंदर जो आत्मा है उसका स्वभाव ही निरंतर सक्रिय रहता है । आत्मा की उपस्थिति के बिना भौतिक देह हलन-चलन नहीं कर सकता । उसकी उपस्थिति से ही हमारे शरीर से सभी स्वाभाविक कर्म होते हैं। जो कोई व्यक्ति कर्म करता दिखाई पड़ता है वास्तव में वह स्थूल कर्म है। हम नेत्र, मूख, कान, नाक तथा विचार द्वारा जो कर्म करते है वह सूक्ष्म कार्य है। सूक्ष्म कर्म अधिक शक्तिशाली होते हैं। क्योंकि सूक्ष्म कार्य में से ही स्थूल कार्यो का जन्म होता है। प्रथम तो सूक्ष्म मन द्वारा विचार उत्पन्न होता है उसके बाद ही कर्म होता है। कर्म के कई प्रकार है । मुख्य पाँच प्रकार के कर्म होते है । (१) स्वाभाविक कर्म (२) सहज कर्म (३) नियत कर्म (४) परिस्थिति प्राप्त कर्म तथा (५) यज्ञ कर्म।

(१) स्वाभाविक कर्म : हमारे शरीर के अंदर आत्मा की उपस्थिति से ही हमारा हृदय, मस्तिस्क, फेंकड़े आदि शरीर के अंग भी कार्य करते हैं। उसे स्वाभाविक कार्य कहते हैं।

(२) सहज कर्म : सहज कर्म वह है जिस में कर्म शिखाना नहीं पड़ता। मनुष्य सहजता से करने लगता है। संस्कार सहजता से ही धारण होते हैं । उदाहरण बालक के जन्म के बाद कुछ क्रियाए उसे सिखानी नहीं पड़ती। वह सहजता से ही करने लगता है।

(३) नियत कर्म : नियत कर्म अर्थात् वर्ण व्यवस्था अनुसार चार वर्ग है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र । जो मूल धर्म अनुसार अथवा सामाज में से सामाजिक संस्कार अनुसार प्राप्त होतें है। उन कर्मो को मनुष्य के नियत कर्म कहते हैं।

(४) परिस्थिति प्राप्त कर्म : परिस्थिति प्राप्त कर्म अर्थात् कुछ कार्य मनुष्य को ना करना ही तो भी जीवन की कुछ परिस्थितियों के कारण कुछ विपतिओ या संजोग वश उचित कर्म करना होता है। उसे परिस्थिति प्राप्त कर्म कहते हैं।

(५) यज्ञ कर्म : यज्ञ कर्म अर्थात् होम कर्म अथवा ज्ञान यज्ञ, सेवा यज्ञ, कोई भी उत्तम कर्म करने को यज्ञ कर्म कहते हैं । मनुष्य अपने जीवन में आगे के चार कर्म करता है। परंतु ऐसा नहीं है की मनुष्य को मात्र यही कर्म करते हैं। उन सभी कर्मों में मनुष्य को यज्ञ कर्म का प्रधानता देनी चाहिये। यज्ञ कर्म के कई प्रकार है।

(१) ब्रह्म कर्म : ब्रह्म कर्म अर्थात् वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया जाता है। उसे ब्रह्म कर्म कहते हैं।

(२) देव-कर्म : देव कर्म अर्थात् आप अपने ईश्वर की जो भक्ति उपासना करते हैं उसे देव-कर्म कहते हैं।

(३) पितृ कर्म : पितृ कर्म अर्थात् माता-पिता की सेवा को पितृ कर्म कहते हैं । आप भजन-भक्ति, शास्त्र-अध्ययन सब कुछ करते होंगे, लेकिन माता-पिता की सेवा नहीं करेंगे तो इन सभी कार्य का कोई फल प्राप्त नहीं होगा। इस कारण पितृ कर्म भी आवश्यक है।

(४) भूत यज्ञ : भूत यज्ञ अर्थात् पशु पक्षी के प्रति दया भाव तथा उनका पोषण करना। गाय को रोटी खिलाओ। पक्षी को दाना डालना यह सब नियमित करना चाहिये।

(५) मनुष्य कर्म : मनुष्य कर्म अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के प्रति आदर तथा प्रेम भावना। कोई बुरा व्यवहार करे तो भी उसका अवगुण नहीं लेना चाहिये। क्योंकि ऐसे मनुष्य दया के पात्र होता है। उन्हें अज्ञान होता है। हम उन्हे सुधार नहीं सकते ऐसे लोग होते है। वे अपने अनुभव से सुधरते है। कुदरत सभी को अपने कर्म का ही कर्म प्रदान करती है। इस कारण प्रत्येक व्यक्ति को निर्दोष समझना तथा मानवता दिखानी चाहिये । भगवान का दास बनकर रहना चाहिए। अर्थात् भगवान के नौकर बनकर रहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जो भगवान का दास है उसे कहना नहीं पड़ता वे अपने आप ही भगवानकी आज्ञा अनुसार आचरण करते हैं। उसे दास भक्ति कहते हैं। जो आप निष्काम भाव से इतने कार्य करेंगे तो कलयुग में भी सतयुग की अनुभूति होती। जिस प्रकार वृक्ष की बड़ो में पानी डालने से पत्तियां तथा डालिया अपने आप हरिभरी हो जाती है। उसी प्रकार भगवत् भाव में पारायण बन कर कर्म करने से मनुष्य प्रत्येक जीव की अर्थात् अपनी, कुटुंबकी, समाज, देश, मानवता आदि की स्वयं ही सर्वोच्च सेवा कर पाता है। जो मनुष्य के कर्मो से भगवान प्रसन्न हो जाय तो प्रत्येक व्यक्ति संतुष्ट हो जायेगा । नरनारायणदेव आप सभी को उसी प्रकार कर्म करने की शक्ति प्रदान करें ऐसी नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

●

गुरु के ऋण का स्मरण करने के पर्व का नाम है गुरु पूर्णिमा

- सांख्ययोगी गीताबाई तथा आनंदीबाई (विरमगाँव)

सर्वावतारी सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने स्वरुप की प्रत्यक्षता को अखंड रखने हेतु संवत १८८२ के कार्तिक शुक्लपक्ष-११ प्रबोधनी एकादशी के दिन वडताल तथा अहमदाबाद ऐसे दो स्थानों पर आचार्य पद पर अपने अपर स्वरुपों को स्थापित किया था । उस समय महाराज के पास हजारो नंद संत थे । श्रीहरि की सार्मथ्यता को लेकर वे प्रत्येक संत एक-एक अवतार जितना कार्य करने के लिये समर्थ थे । परंतु सभी मुमुक्षुओ को दूसरी बात, प्रथम के वचनामृत में भी मुक्तानंद स्वामीने महाराज से पूछा कि भगवान का भक्त जब पंचमयभूत का त्याग करके भगवान के पास जाता है तो वह किस प्रकार के देह को प्राप्त करता है। तब श्रीजी महाराजने कहा कि, धर्मकुल के आश्रित ऐसे भक्त भगवान की इच्छा अनुसार ब्रह्मदेह को प्राप्त करता है । जब देह को त्याग कर भगवान के अंतिम धाम में जाते है तो कोई गरुड पर बैठकर जाता हैं। कोई विमान में बैठकर जाता है । कोई रथ में बैठकर जाता है । इस प्रकार भगवान के भक्त भगवान के धाम में जाते हैं। इस प्रकार वचनामृत में भी श्रीजी महाराजने कई बार धर्मकुल की महिमा का वर्णन किया है।

कच्छ जाते समय चोटीला गाँव में एक समय प.पू. आदि आचार्य महाराजश्री पधारे थे । तब एक किसान हरिभक्त जेठा पटेल तथा भक्तजनों ने उनका अति भव्य स्वागत किया था । गाँव की पश्चिम दिशा में आये हुए बड़े तालाब के पास तंबु लगाये थे । परंतु तालाब में पानी बिलकुल नहीं था । दूसरे दिन जाने का निर्णय किया । लेकिन जेठाभाई तथा भक्तोंने आग्रहपूर्वक कहा कि, हमने तो ग्यारह दिवस ग्यारह तरह की रसोई बनाने की तैयारी कर ली है । ग्यारह दिवस रुकने की विनती की परंतु अहमदाबाद छोडे कई दिन होने के कारण किसी को भी रुकना पसंद नही था । किसी ने कहा यहाँ पानी की कमी है तो किसीने कहा आषाढ महिना होने के कारण वर्षा से नीचे वाले स्थानों पर तथा रास्ते में पानी भर जायेगा । मिट्टी चीकनी हो जाने के कारण अहमदाबाद जाने में मुसीबत होगी । अयोध्याप्रसादजी महाराजने गाँव के आगेवान भक्त आणंदजी पटेल से सलाह मांगी । आणंदजी पटेलने कहा समस्त गाँववासी आपकी रात-दिन सेवा करेंगे । किसी प्रकार की कोई कमी नहीं होगी । इसलिए आप रुकजाईये । रासाला के अखाभाईने कहा कालावाड़ में यदि पानी की चार बूंदे भी गिर गई तो रास्ते इतने चीकने हो जायेंगे की चलता भी नहीं जाएगें । अयोध्याप्रसादजी महाराजने प्रत्युतर दिया कि आप निश्चिंत रहिए अखाभाई जब तक हम अहमदाबाद पहुँचकर नरनारायणदेव के दर्शन नहीं कर लेते तब तक पानीकी एक बूंद भी नहीं गिरेगी । जिन लोंगो को शीध्रता है वे चले जाए । मैं यही रुकुंगा । और उन्होंने श्रीहरि से प्रार्थना की, "गाँव में एक ही कुआँ है जो खारे पानी का है । उस कुएँ का पानी मीठा हो जाए ।" पानी प्राप्त होने पर कोई तकलीफ नहीं पड़ेगी ।

दूसरे ही दिन श्रीहरिने आचार्य महाराजश्री की विनती सुनकर खारे पानी को मीठा पानी कर दिया । पानी भी उपर आ गया । इस प्रकार श्रीहरि सदैव अयोध्याप्रसादजी महाराज के समीप रहते थे । ग्यारह दिवस बाद सभी गाँववासियों को प्रसन्न करके अहमदाबाद पधारकर सभी ने श्री नरनारायणदेव के दर्शन किये और तुरंत ही तेज वर्षा होने लगी । ऐसा अजोड़ सामर्थ्य तथा वचन सिद्धि अयोध्याप्रसादजी से लेकर व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजकी परंपरा में है । इस प्रकार धर्मकुल के आश्रित रहकर उसमें दृढ़ता रखने में ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है । दूसरे किसी भी स्थान पर भट्कने की आवश्यकता ही नही है । प्रेमानंद स्वामी के शब्दों में यह बात सुंदरता से वर्णित होती है।"

जेने जोईने ते आवो मोक्ष मागवा रे लोल,
आज धर्मवंशी ने सार, नरनारी.....
शीद जाो छो बीजे शिर कुटवा रे लोल,
यां तो तरत थाशे, पावन नरनारी.....
भूंग शीदने भटको छो मंत पंपमां रे लोल,
आवो सत्संगी मेलीने मोक्षरुप, नरनारी.....
तुओ आंख उघोडीने विवेकनी रे लोल,
शीद करो गोल गोल एकपाद, नरनारी.....

श्रीजी महाराजने इस पृथ्वी पर पधारकर एकान्तिक धर्म का स्थापन किया उसके बाद ४९ वर्ष की उमर में अपनी लीला पूर्ण की थी । और अपना कार्य अपने पुत्रों को आचार्यश्री को सौंप दिया । इस प्रकार, अक्षरधाम की प्रणाली महाराज अक्षरधाम में से लेकर आए हुए आचार्य महाराज को कहा कि हमारी मूर्ति प्रस्थाति करके उसकी आरती उतारीए । हम उसी में स्थापित हो जाएँगे । उसके बाद ही उसका पूजन होगा । आचार्य महाराज द्वारा, मूर्ति प्रतिष्ठित नाहो ऐसी मूर्ति चाहे कितनी भी हीरा जड़ित किमती हो उसकी पूजा नही हो सकती ।

"करशे दर्शन ने गुण लेशे रे,
वली पोंचा प्रमाणे कांई देशे रे,
श्रद्धा सहित सेवा करे सोई रे,
वली राजी थाशे एने जोई रे,
ऐवा जन जे जे जगमांय रे,
तेनी करवी मारे सहाय रे."

पुरुषोत्तम प्रकाश में निष्कुलानंद स्वामीने महाराज के वचनों को लिखा है। इस वचन के अनुसार यदि हमारी संपति ही हमारे गुरु के काम नहीं आयेगी तो इस पृथ्वी पर मात्र खीचड़ी खाने हेतु तो नहीं आये है। खीचड़ी तो हमने कई जन्मों में खाई है और अनेक जन्म में खा भी लेंगे। ऐसे गुरुपूर्णिमा के पर्व के दिन जो गुरु के गुण गा लेंगे तो गुरु की प्रसन्नता के कारण दूसरी बार खीचडी खाने की बारी नहीं आयेगी।

इस कारण गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुपूजन-वंदना करके उनके चरणों का सुख लेना चाहिए. क्योंकि उनके पूजनीय चरणों के स्पर्श से प्रवाहित उर्जा ही सद्मार्ग की ओर ले जायेगी। जो हमारे मन, प्राण, बिचारो को शुद्ध करते है। श्रीजी महाराज के दिखाये हुए मार्ग पर चलकर आदर्श जीवन जीना चाहिए।

●

सबसे बड़ा परोपकार कौन सा है

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

परोपकार शब्द का गुजराती शब्द कोश में अर्थ होता है। दान, दया तथा परमार्थ यह तीन मुख्य अर्थ है। दान परोपकार का पर्याय है। दान तीन प्रकार के है। (१) सात्विक (२) राजस (३) तामस। जो दान सुपात्र को बिना किसी अपेक्षा के दिया जाये उसे सात्विक दान कहते हैं। ऐसे दान में दुःख तथा क्लेश उत्पन्न करता है उसे राजस दान कहते हैं। जो दान कुपात्र हो अनिच्छा से दिया जाय उसे तामश दान कहते हैं।

परोपकार का दूसरा पर्याय दया है। किसी भी संकट की स्थिति में रक्षा करने को दया कहते हैं। भगवान स्वामिनारायण कैसे दयालु है। प्रेमानंद स्वामीने लिखा है कि, "अति दयालु रे स्वभाव छे स्वामीनो परदुःख हारी रे वारी बहुनामीनो कोईने दुखियो रे, देशी न खमाये पया आगी रे, अति आकला थाय अन्नधन वस्त्र रे, आपीने दुःख राणे करुणा द्रष्टिरे।

भगवान स्वामिनारायणनी दया की स्वभाव की पराकाष्ठा का दृष्टांत उनके अपने गुरु रामानंद स्वामी के पास जब धर्मकुल का पद स्वीकार्य किया तब माँगे हुए दो बरदान में प्रतीत होती है। एक तो हमारे आश्रितो को अगर एक बिच्छु के डंख की वेदना हमारे शरीर में हजारो बिच्छुओं के डंख के भांति हो लेकिन उनको कोई वेदना ना हो। दूसरा वरदान यह मांगा की हमारे आश्रित अन्न-वस्त्र से कभी दुःखी ना हो पाये।

परमार्थ का अर्थ है परम कृपालु परमात्मा तथा उनके एकांतिक संतगण ही यथार्थ में परमार्थी है। परम परोपकारी है। अर्थात् जीवात्मा के परम कल्याण का अर्थ ही परोपकार है। क्योंकि जीवात्मा को काल, कर्म तथा माया के बंधन में से मुक्त करके अभयदान प्रदान किया जाता है।

श्रीहरि तथा सुराखाचर वडताल जा रहे थे। रास्ते में भाल प्रदेश आते ही प्रभात हो गई। श्रीहरिने कहा, "बिना दातुन किए हम आगे नहीं जाएंगे।" यह सुनकर सुराखाचर पास के "सोढी" गाँव में गए। कहीं पर भी बबुल का दातुन नहीं मिला। परंतु पास में रहती एक मुस्लिम स्त्री ने बबुल का पेड़ लगाया था। सुराखाचरने दातुन माँगा तो उसने इनकार कर दिया। तब सुराखाचर ने उसे श्रीहरि के निश्चय के बारे में बताय कि "स्वयं खुदा को दातुन चाहिए।" उस स्त्री को प्रभु की महिमा बताया और उस स्त्री के सात दातुन लेकर प्रभु के पास पहुँचे। "इस भक्तने कहा कि आप खुदा हो इसलिये आपसे मैं दुआ मांगती हु की मुझ पर सदैव नजर रखना।"

बीबी का वचन सुनकर महाराजने कहा, "तुमने खुदा जानकर मुझे दातुन दिया है तो मैं जिस प्रकार मेरे एकांतिक भक्तों का कल्याण करता हु उसी प्रकार तेरा भी कल्याण करुँगा। इतना कहकर उन्होंने सुराखाचर को बाहों में लेकर कहा कि, "तुमने एक यौवन जाती की स्त्री को मेरा निश्चय करवाया है इसी लिए तुम्हे ब्रह्मांड, तारने जितना पुण्य प्रदान करता हुँ। अर्थात् ब्रह्मांड में आग लगी हो और कोई व्यक्ति मेघास्त्र बाण मारकर अथवा मंत्र प्रताप से आग बुझा दे और अबजो की संख्या में जीवों की रक्षा करने वाले को जितना पुण्य मिलता है वह तुम्हें प्रदान करता हुँ। इस कारण निष्कुलानंद स्वामीने पुरुषोत्तमप्रकाश में कहा है कि,

(चोपाई)

बीजा कोटी-कोटी करे दान रे,
नावे जीव उद्धार्या समान रे।
जेथी जन्म मरण दुःख जाय रे,
पामे अभय पद सुखी थाय रे।
ऐ तो परमार्थ मोटो भारी रे,
सहु जुओ मनमां विचारी रे।
ऐम पोते बोल्या परब्रह्म रे,
पूर्ण काम जे पुरुषोत्तम रे।

(अर्थ)

शास्त्रो में कई प्रकार के दान का वर्णन है। परंतु कोई करोडों की संख्या में दान करता है, लेकिन एक जीव को, एक मनुष्य को मोक्ष मार्ग का ज्ञान देकर, कथावार्ता करके जो दान देता है वह करोड़ो के दान से भी श्रेष्ठ है। क्योंकि दान से तो पुण्य कम होता है। जब कि परमार्थ से हरिधाम की प्राप्ति होती है। परोपकार सभी प्रकार का कार्य है।

●

कार चड़े या संस्कार

- सांख्ययोगी उषाबा (सुरेन्द्रनगर)

हमारे पूर्वज पुत्रीयों को ससुराल भेंजते थे तब कैसे कैसे उपदेश देते थे उनके बारे में ध्यान देते हैं।

''दादा समझावे दीकरी, दीकरी डाह्या थई रहेजो, सासु, ससराना गढ़पण बालज्यो, तेनी सेवा रे करज्यो। जेठ देखीने जीणा बोलज्यो, जेठाणीने वादन करशो।

नानो दीयर होय लाडको, तेना हसवा खमजो, नानी नणंद जाय सासरे, तेना माथड़ा गुंथजो, सौ साथे संपीने रहेज्यो, कोईनी साथे न लड़शो, पियरना संस्कारो दीपावजो, सासरियामां समावज्यो, पतिव्रताना धर्मो पाणजो, पतिने देव तुल्य मानजो, सासरियाने पियर मानजो, एवुं समजीने रहेज्यो, पतिनी आज्ञामां रहेज्यो, तेनी रजा लई आवज्यो।''

हमारे बड़े-बुर्जुग ऐसा उपदेश देते थे। वे दहेज में संपत्ति नही परंतु संस्कार देते थे। वर्तमान के माता-पिताने संस्कार देना छोड़ दिया है। और संपत्ति देना शुरु कर दिया है।

वर्तमान समय में टीवी सेट, सोफासेट, किचन सेट, टी. सेट, डीनर सेट ऐसी संपत्ति ससुराल लेकर जाते हैं। यदि कोई उसके मायके कि वस्तु का उपयोग करता है तो तुरंत कह देती है कि, ''वो मैं मेरे मायके से लायी हुँ। उसे मत छुना। उसके बाद झगड़ा करना शुरु कर देती है।

माता-पिता को समाचार मिलते ही अपनी पुत्री को अपनी संपत्ति एकत्र करके मायके में बुला लेतें है। और उसका अच्छी जगह संबंधकरने की लालच देते है। मा-बाप की सलाह से वह स्त्री मायके में आ जाती है और केवल धनपति का ही रिस्ता करती है। उसके ना तो संस्कार देखे जाते हैं ना तो चारित्र्य देखा जाता है। शास्त्रो में कहा गया है कि मनुष्य चाहे कितना भी विद्यावान हो कितना ही सत्ताधीश हो, रोगी शरीर-सुख, वैभव, संपत्ति हो लेकिन एक मात्र सज्जनता ना हो तो सब कुछ ना होने के बराबर है। चंद्रमां के समान मुख, गोरा गाल, सुंदर नाक, धुंधराले बाल, सब कुछ हो लेकिन एक चारित्र्य में ही कमी हो तो सब कुछ बेकार है।

हे भक्तगण ! पानी बिना तालाब, फल बिना वृक्ष, प्राणियों के बिना प्रदर्शन तथा संस्कार बिना मनुष्य की शोभा होती नही है।

इस लोक तथा परलोक में यदि सुखी होना है तो अपने बच्चों को संस्कार देकर उनकों मोक्ष के मार्ग पर ले जाना चाहिए। अंत में इतना ही करना है कि ''कार'' (मोटर गाडी़) नहीं देंगे तो चलेगा परंतु ''संस्कार'' अवश्य दीजिएगा।''

●

भगवान भक्तों के शुभ संकल्प पूर्ण करते हैं

- भगवतीबहन कांतिलाल सोनी (पाटण - उ.गु.)

गढ़पुर में अजुभाई पटेल नामक सत्संगी थे। उनके समीप घेला धांधळ के मकान थे।

अजुभाईने बाहर गाँव से आनेवाले भक्तों को अपने पड़ोशी को पीने का पानी मिले इसलिए एक कुआँ बनवाया था। उस कारण वरुणदेव का नित्य पूजन करना चाहिये ऐसा अजुभाईने सोचा। परंतु आर्थिक मुसीबत के कारण अनुकूलता अनुसार प्रसंग करने का निर्णय किया। उस समय एक सुंदर प्रेरणादायक प्रसंग हुआ।

गढ़पुर में कोली जाति की लाडुबाई निराधार विधवा बुढ़ीमां थी। उन्हें महाराज में खूब प्रेम, भक्ति थी। बुढ़ीमां मजुरी करके अपना निर्वाह करती थी। किसान लोग खेत में से उन्हें सब्जी आदि भी लेने देतें थे।

एक दिवस खेत में से सुंदर हरी भरी सब्जी एकत्र करके संकल्प किया कि, इस सब्जी को महाराज को खिलाकर मोक्ष प्राप्त करने का विचार किया। रास्ते में दरबार जाते हुए महाराज को मिले, महाराजने पूछा, ''मा क्या सोच रही हो।'' बुढ़ीमांने कहा इस सब्जी को खा कर मेरा मोक्ष करीए। महाराजने सब्जी स्वीकार करके पूछा आप अपना जीवन कैसे निर्वाह करती है। बुढ़ीमांने कहा आपका ही आधार और आश्रय है। मजदूरी करती हुँ। महाराजने कहा आज के बाद मजदूरी मत करना। हमारे दरबार में घोड़शाला में सेवा करके लाडुबाई के वहाँ भोजन कर लिया करना।

इस घट्ना से प्रेरणा लेकर अजुभाई महाराज के पास आये। कहा कि वरुणदेव के पूजन निमित्त पर सब्जी रोटला बनाकर महाराज तथा संतो को खिलाया जाय। ऐसा सोचकर प्रभु के पास आए। महाराजने कहा आपका संकल्प पूर्ण करेंगे। आप कितना खर्च करना चाहते है। उस समय अजुभाई के पास ११७ रुपये थे। महाराज कौ दे दिये। महाराजने पूजन का दिवस तय करके सीधा मंगवाया। सब्जी में उत्तम घी डालकर वघार किया। तथा बाजरा का रोटला बनवाया। महाराज, संतो भक्तों को खिलाया। अजुभाईने महाराजकी पूजा करने वस्त्र तथा ५ सोना महोर भेट की। महाराजने उन्हे समाधिकरवाकर सीधा धाम के दर्शन करवाये। महाराज के सामने उन्हों ने संसार में न रहने की तथा साधु बनकर सेवा करने की इच्छा व्यक्त की।

महाराजने दीक्षा देकर उन्हे संत बनाया।

वर्तमान में भी महाराज सत्संग में सभी भक्तों के शुभ संकल्प अवश्य पूर्ण करते हैं।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिरमें श्रीहरि की अंतर्ध्यान विरह की कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण भगवान की अंतर्धान तिथि के उपलक्ष में प्रसादी के दिव्य सभा मंडप में शाम ५-३० से ७-३० तक स.गु. शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी गुरु महंत शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी (भुजवाले)ने श्रीहरि की विरह कथा इतनी सुंदर कही की सभी संत-भक्तों के आंखो से अश्रु बहने लगे । जैसे महाराज आज स्वयं धाम में जा रहे हैं। प.भ. जयेशभाई सोनी तथा उनकी टीम ने सुंदर गीतो की भजनावली प्रस्तुत की थी । महंत स्वामीने कहा की ऐसी कथा सदैव सुखकारी होती है । सभी हरिभक्तोंने कहा ऐसी कथा तो हमने प्रथमबार सुनी है। इस कथा के यजमान पद का प.भ. हेमचंदभाई सोनी प.भ. जयेशभाई सोनी (गायक कलाकार)ने लाभ लिया था। - साधु नारायणमुनिदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में चंद्रग्रहण निमित पर कीर्तन भक्ति तथा धून का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१५ को बुधवार ता. १५-६-२०११ के दिन चंद्रग्रहण की रात्री में ११ से प्रातः ३-१५ तक श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पूज्य महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन अनुसार शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल), शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी, शास्त्री स्वामी विश्वस्वरुपदासजी, बलदेवप्रसाददासजी स्वामी, हरिजीवनदासजी स्वामी (गवैया) आदि सर्वे संतो तथा प्रसिद्ध गायक कलाकार प.भ. जयेशभाई सोनी, प.भ. अमरीषभाई सोनी, नितिनभाई सोनी आदि हरिभक्त तथा संतो ने कीर्तन-भक्ति तथा श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की थी।

- साधु नारायणमुनिदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामोल (जामफलवाड़ी महादेवनगर) का चौथा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सानिध्य में तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से रामोल जामफलवाडी मंदिर का चौथा पाटोत्सव ता. ५-६-११ के दिन धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर सुबह ७-३० बजे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया था । सुबह १०-१५ बजे प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । उनके हाथों से अन्नकूट की आरती तथा धून की पूर्णाहुती हुई थी।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारो का सेवा के लिए सन्मान किया गया । स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, स.गु.शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी, स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. नारायणमुनिदासजीने प्रसंगोचीत उपदेश दिया । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

- पुरुषोत्तमभाई लहेरी

न्यु राणीप विस्तार में चौथी रात्रीय सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) के मार्गदर्शन से न्यु राणीप विस्तार में ता. २९-५-११ के रविवार को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । न्यु राणीप विस्तार में हरिभक्तों को कथा-कीर्तन का लाभ प्राप्त हुआ था । प्रथम सभा में कीर्तनकार मयंक मोदी द्वारा कीर्तन भक्ति तथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने (कोटेश्वर) कथा का लाभ प्रदान किया था । दूसरी सत्संग सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दर्शन तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु.देव स्वामी, पी.पी. स्वामी आदि संत गण का लाभ मिला था । सभा में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, शा. स्वा. अभय स्वामी तथा शा. दिव्यप्रकाश स्वामी आदि संतोने कथा की । तीसरी सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । जिस में श्री दिनेशभाई वधासीया द्वारा कीर्तन भक्ति तथा शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजीने कथा का लाभ प्रदान किया था । चौथी सत्संग सभा में सुप्रसिद्ध कलाकार श्री पूरवभाई पटेल द्वारा कथा कीर्तन भक्ति तथा शा. राम स्वामी तथा चैतन्य स्वामीने कथावार्ता की । प्रत्येक सभाका संचालन स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) ने किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री ने यहाँ का भव्य मंदिर बनाने का संकल्प किया । प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प के कारण यहाँ प्रत्येक महिने में सत्संग सभा का आयोजन करने का निश्चय किया गया।

सत्संग सभा का स्थल श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट गाँव का राणीप मंदिर तथा नवा वाड़ज मंदिर में बेनर लगाया जाएगा । जिसमें स्थान तथा तारीख का निर्देश किया जाएगा । प्रत्येक महिने में नए बेनर के साथ स्थान तथा तारीख होगी । चारो सत्संग सभा के यजमान नीचे के अनुसार थे।

(१) प्रयाग माधवदास (मारुसणा) ता. २६-२-११
(२) पटेल सांकलचंद रेवीदास चोक्सी ता. २४-३-११
(३) पटेल भावेशकुमार भीखाभाई (वडु) ता. २४-४-११
(४) पटेल बलदेवभाई जमनादास (डांगरवा) ता. २९-५-११

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, न्यु राणीप

श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासणा का ३४ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्रहरि के दिव्य चरणो से अंकित ऐसे झुलासण गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदरि का ३४वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धूमधाम से मनाया गया।इस प्रसंग पर ता. २६-५-११ से ता. ३०-५-११ तक पंच दिनात्मक रात्रीय भक्ति चिंतामणी (परचा) प्रकरण की कथा नवयुवान शास्त्री भक्तिनंदनदासजी गरु पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) के सुमधुर कंठ से पूर्ण हुई थी। ता. २९-५-११ प्रातः ध्वजा की शोभायात्रा यजमानश्री के घर से धूमधाम से निकाली गई तथा मंदिर वापस आकर ध्वजा का रोपण किया गया। ता. ३०-५-२०११ के दिन प्रथम सुबह ठाकुरजी की महापूजा, ठाकुरजी की आरती, अन्नकूट, अभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से सम्पन्न हुआ था। जहाँ कथा की पूर्णाहुति के बाद यजमान परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये। प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. घनश्यामप्रकादासजी (माणसा महंत) मूली से शा.स्वा. सत्यप्रकाश स्वामी, कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी के शिष्य नारायणमुनि स्वामी। शा. हरिॐ स्वामीने (जेतलपुर वाडी) प्रसंगोचित प्रवचन किया था। समग्र कार्यक्रम का संचालन मंदिर के नव युवान कोठारी प्रकाशभाई गज्जर तथा प.भ. पियुषभाई बारोटने किया था। समग्र उत्सव में जेतलपुर के महंत पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य पी.पी स्वामी की प्रेरणा-मार्गदर्शन उत्तम था।

- साधु विश्वप्रकाशदास, कलोल नूतन मंदिर महंतश्री

प्रांतिज मंदिर का १२४ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तथा पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल तथा अ.नि.स.गु. गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी की प्रेरणा से मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का १२४ वाँ पाटोत्सव अ.नि. प.भ. सोनी अंबालाल पोपटलाल परिवार की तरफ से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-२ ता. ३-६-११ के दिन प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ निश्रा में धूमधाम से मनाया गया। श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक के यजमान अ.नि. ताराबहन बाबुलाल परीख परिवार ने लाभ लिया था। प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिपूर्वक संपन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किए। पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम), पू. शा. घनश्याम स्वामी सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त दिये। समग्र आयोजन महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी तथा ट्रस्टी मंडलने किया था। ता. २-६-११ की रात प.भ. जयेशभाई सोनी का भक्ति संगीत का सुंदर कार्यक्रम हुआ था। प.पू. लालजी महाराजश्रीने बहनों के मंदिर में आरती उतारकर यजमान परिवार के घर पदार्पण की।

- कोठारी हरिभाई मोदी

नवागाँव (कपडवंज) मंदिर में प्रथम पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा रंग महोल के पूजारी राम स्वामी की प्रेरणा से नवा गाँव का प्रथम पाटोत्सव ता. २२-५-२०११ को धूमधाम से मनाया गया। जेतलपुर के शा. हरिॐ स्वामीने पूजारी संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती किया।

प्रासंगिक सभा में शा. हरिॐ स्वामी, स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (कलोल मंदिर महंत), शा. उत्तम स्वामी (महेसाणा), पू. श्याम स्वामी, शा. भक्ति स्वामी तथा विष्णु स्वामी उपस्थित थे। यजमान पद का लाभ प.भ. दशरथभाई शांतिलालभाई पटेल (कोठारी)ने लिया था।

- राम स्वामी रंगमहोल घनश्याम महाराज के पूजारी

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबड़ीया (पंचमहाल) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पंचमहाल के पुराने राबड़ीया गाँव में नूतन हरि मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण होने पर वैशाख शुक्ल पक्ष-९ ता. १२-५-२०११ को मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी (जयपुर महंतश्री), के वक्ता पद पर संहिता पाठ के वक्तापद पर स्वा. विश्वप्रकाशदासजी बिराजमान थे।

त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था। उसके आचार्य पद पर श्री तुषारभाई लहेरुने (स्वा. संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी ने विधिकरवाई थी। इस प्रसंग पर ठाकुरजी की नगर यात्रा, धूमधाम से निकाली गई।

ता. १२-५-२०११ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब संत हरिभक्तों ने उनका धूमधाम से स्वागत किया। मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा तथा यज्ञ-कथा की पूर्णाहुति की।

प्रासंगिक सभा में मूर्ति तथा सिंहासन के यजमान प.भ. प्रेमजीभाई केशराभाई राघवाणी तथा अन्य सेवा के यजमनोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी, छपैया, नाथद्वारा, चराडवा के महंतश्री तथा शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी, जेतलपुर के श्याम स्वामी, अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के शिष्य नारायणमुनि स्वामी तथा विश्वस्वरुप स्वामी आदि संतगण पधारे थे। अंत में प.पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये। सभा का मार्गदर्शन शा.स्वा. माधवजीवनदासजी तथा सभा संचालन शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीने किया था।

– गोपालभाई भगत

मेरानी मुवाडी मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु.शा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मेरानी मुवाड़ी गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव मनाया गया।

ठाकुरजी का अभिषेक करके अन्नकूट की आरती की गई। सभा में जेतलपुर के शा. भक्तिनंदन स्वामीने कथा वार्ता का लाभ दिया। महेसाणा के शा. उत्तम स्वामी, कोठंबा से माधव स्वामी पधारे थे। यजमान परिवार का सन्मान करके आशीर्वाद दिए। सभी प्रसाद ग्रहण करके धन्य हो गए। –विजयभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाड़ज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १२-६-२०११ रविवार सुबह ८ से शाम के ९ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया। जिसका प्रत्येक हरिभक्तों ने लाभ लिया। – कोठारीश्री

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स.गु. लक्ष्मणजीवनदासजी स्वामीकी प्रेरणा से इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की १८१ वी अंतर्धान तिथि के उपलक्ष में ता. ११-६-२०११ की सुबह ८ से ११ तीन घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गयी।

– गोरधनभाई सीतापरा

हर्षद कोलोनी (बहनों का) मंदिर

प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के पूजारी रणियातबाई की प्रेरणा से सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की १८१ वी अंतर्धान तिथि के उपलक्ष में ज्येष्ठ-१० को ६ घंटे तथा स्वामिनारायण धून का आयोजन किया गया। – गोरधनभाई सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर मरतोली १९ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा संप्रदाय के कथाकार संत पू.शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का १९ वाँ पाटोत्सव ता. १३-५-२०११ को धूमधाम से मनाया गया। यजमान पद का लाभ प.भ. बलदेवभाई जोईताराम ने लिया था। इस प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट तथा समूह महापूजा की गई। पू.शा. स्वा. हरिप्रियदासजी (स्वा. मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२३) ने कथा वार्ता का लाभ दिया। सभा संचालन कोठारी मणीभाईने किया था। – कोठारीश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर डीसा दशाब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से डीसा श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दी महोत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. १६-५-२०११ से ता. २१-५-२०११ तक शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (सिद्धपुर महंतश्री) ने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित स्नेह गीता की कथा का लाभ दिया। इस प्रसंग पर सापावाड़ा, धोलका से संतगण पधारे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सबको आशीर्वाद दिये। हरिभक्तों ने तन, मन, धन से सेवा की। – गुणवंतभाई पटेल, डीसा

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण

समस्त बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा सां. पू. करलाबाई की प्रेरणा से तथा सां. भक्तिबाई तथा हीराबाई के सहयोग से ता. २१-५-२०११ को श्री स्वामिनारायण मंदिर का २१ वाँ पाटोत्सव सोनी प्रभाबहन जसभाई के यजमान पद पर धमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण सां. कोकीलाबाई (सुरेन्द्रनगर) ने की। पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी। इस प्रसंग पर पाटण, वांकानेर, लींबडी, विहार तथा सुरेन्द्रनगर के उषाबाई ने सभा में प्रवचन किया।

– सां. हीराबाई, पाटण

हर्षदनगर (बापुनगर) बहनों का प्रथम तथा भाईओं के मंदिर का २६ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद तथा प.भ. दासभाई की प्रेरणा से ता. २५-५-२०११ को उपरोक्त मंदिरो का पाटोत्सव मनाया गया तथा दोनों मंदिरों में देढ घंटे की महामंत्र धून की गई।

दोनो मंदिरो में प.पू. बड़े महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारी। प्रासंगिक सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी हरिभक्तों से अनुरोधकिया की वे अपने सगे-संबंधियों को म्युजियम की मुलाकात करवाए।

इस प्रसंग पर स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा कालुपुर तथा एप्रोच मंदिर के संतगण पधारे थे। – गोरधनभाई सीतापरा

मेमनगर (भक्तिनगर) मंदिर का १२ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से मेमनगर भक्तिनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर का १२ वाँ पाटोत्सव वैशाख कृष्णपक्ष-९ ता. २५-५-२०११ को विधिपूर्वक मनाया गया।

प्रातः ६-३० बजे महापूजा संपन्न हुई। जिसके यजमान प.भ. राजेन्द्रभाई देसाई तथा पटेल विनोदभाई रामदासभाई थे।

सुबह ७-०० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी संत-मंडल सहित पधारे थे। उनके हाथों से श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक करवाया गया।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. विश्वविहारीदासजी आदि संतोने प्रवचन किए। अंत में प.पू.बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा की यदि सुखी होना है तो श्रीजी महाराज की महिमा को समझना

चाहिए । महिमा के साथ भजन भक्ति करने से सुख अपने आप मिल जाएगा । भक्ति दो प्रकार की होती है । भय या प्रेमपूर्वक, यदि चोर पुलीस के भय से चोरी करना छोड़ दे तो भी उसका गुनाह कम नहीं हो जाता । भय से भगवान नहीं मिलते । यहाँ का मंदिर छोटा जरुर है परंतु सर्वोपरि श्रीजी महाराज यहाँ प्रत्यक्ष बिराजमान है । इतना कहकर सभी हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने उत्तम सेवा की ।

– अतुलभाई पोथीवाला

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ पर तीन कथा पारायण का आयोजन किया गया ।

जिसमें माधवपार्क सोसायटी में वाघेला दिपसिंह माधुसिंह तथा वाघेला शणगारबाई दिपसिंह की जीवनचर्या के उपलक्ष में सुदंर भागवत कथा शा.स्वा. घनश्याम स्वामी के वक्तापद पर हुई थी । दूसरी श्रीमद् सत्संगी पारायण श्री राधाकृष्णदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर हरिभक्तों के मंडल की तरफ से की गयी । जिसके यजमान रामोल शांताबाई रणजीतसिंह तथा रविन्द्रसिंह, जितेन्द्रसिंह बने थे ।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक करवाया गया । तथा कथा की पूर्णाहुति की आरती हुई । बहनो को दर्शन देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी । पाटोत्सव के यजमान बापुपुरा के प.भ. चौधरी जेशंगभाई सवाभाई कोठारी थे । वर्तमान में तीरुपति तुलसी सोसायटी में सत्संग सभा की गयी । – विजय भगत जमीयतपुरा

बामरोली (मध्यप्रदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे

मध्यप्रदेश में ग्वालियर में मोरेना तालुका के बामरोली गाँव के चंबल की घाटी में नरनारायणदेव मंदिर स्थापित है । हमारे आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज जब छपैया गांव जाते थे तो बामरोली गाँव में ही विश्राम के लिए रुकते थे । ठाकुर दरबार की वस्ती वाले इस गाँव के भाविक हरिभक्त पू. अयोध्याप्रसादजी दादा के दर्शन के लिए अवश्य आते थे । उनका मन दर्शन करके निर्मल हो जाता । इस गाँव पर प्रसन्न होकर उन्होंने कहा कि इस गाँव के लोगों की मृत्यु पर यमराज नहीं आयेंगे । यह परंपरा वर्तमान में भी चालु है । उसके बाद आदि महाराज अयोध्याप्रसादजी के शुभ संकल्प से यहाँ शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण किया गया । दुर्गम मार्ग तथा डाकुओ के डर से लोगों की भीड़ कम होती थी । परंतु अब डाकुओं का भय ना होने के कारण तथा रास्ता बन जाने से भक्तों की अच्छी भीड़ होती है ।

प्रत्येक वर्ष पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री अथवा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री कोई ना कोई अवश्य पधारते हैं ।

इस बार ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-५ में असह्य गरमी में भी प.पू. बड़े महाराजश्री संत-हरिभक्तों के साथ पधारे थे । अहमदाबाद से नाथद्वारा, और नाथद्वारा से मथुरा रुककर ठाकुरजी को भोग लगाकर बामरोली जाने के लिए प्रयास किया । भर दोपहर-धूप में ही बामरोली के महंत तथा ठाकुर हरिभक्तों का भव्य स्वागत किया । मुरेना गाँव में एक अति भावि भक्त श्री कमल गोयेल ने प.पू. बड़े महाराजश्री से प्रभावित होकर उनका धूमधाम से स्वागत किया । दूसरे दिन प्रातः बामरोली मंदिर में श्री राधाकृष्ण देव का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों सम्पन हुआ । सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, देव स्वामी (नारायणघाट). शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी, योगी स्वामी, मथुरा के भानु स्वामी तथा यहाँ के महंत शा.स्वा. लक्ष्मीनारायणदासजी आदि संतगण पधारे थे । पाटोत्सव के यजमान सुरेन्द्रनगर की सांख्ययोगी बाईयाँ बनी थी ।

– शा. विश्वविहारीदासजी

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (यु.एस.ए.) २४ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव, श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन का २४ वाँ पाटोत्सव श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से धूमधाम से मनाया गया ।

पूजारी संतोने ठाकुरजी का महाभिषेक किया । इस प्रसंग पर सभा में बोस्टन से पधारे चराड़वा मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी, विहोकन मंदिर के महंत शा.स्वा. माधवप्रसाददासजीने पाटोत्सव की महिमा समझायी थी ।

पाटोत्सव प्रसंग पर विशेष रुप से पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार पधारे थे । मुख्य यजमान परिवारने भूदेव श्री ईश्वरभाई शुक्ल तथा श्री पिनाकिन जानी ने समग्र पाटोत्सव की पूजा विधिकरवाई । कथा-वार्ता-कीर्तन के बाद ठाकुरजी की आरती उतारी गयी थी ।

सभा में बालकों की सत्संग प्रवृत्ति की माधव स्वामीने प्रसंशा की । मंदिर के प्रेसिडेन्ट प.भ. भविनभाईने आगामी २५ वे पाटोत्सव की घोषणा की । – प्रविणभाई

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया न्युजर्सी में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महारजश्री के आशीर्वाद से नृसिंह जयंती मनाई गई । सभा में महंत स्वामीने नृसिंह भगवान की कथा कही ।

परशुराम जयंती के अवसर पर महंत स्वामीने वचनामृत द्वारा पुत्र के लिए "मा" का श्रेष्ठ स्थान है, इस विषय में चर्चा की । सभी को मा-बाप की आज्ञा में रहकर आचरण करना चाहिये ।

– प्रविणभाई शाह

वोशिंग्टन डी.सी. (आई.एस.एस.ओ. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से नियमित रुप से सत्संग सभा होती है।

ता. ६-५-११ के शुक्रवार शाम ७-१५ से १०-०० केन्टन्सवील की डेईझ ईन में सत्संग सभा की गई। जिस में धून, कीर्तन, वचनामृत पाठ तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की तसवीर का पूजन करके प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया।

२१ मई के शनिवार के शाम ४-३० से ९-०० तक देर रात चार घंटे इल्करीझ के होल में सभा हुई। धून-भजन-कीर्तन-कथा-वार्ता-नित्य-नियम, जनमंगल पाठ, भोग आदि की प्रवृति की गई। - कनुभाई पटेल

कलिवलेन्ड (एमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर का तृतीय पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वचन से कलिवलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर का तीसरा पाटोत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. २४-५-२०११ से ता. ३०-५-२०११ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा.स्वा. रामानुजदासजी तथा शा. स्वा. व्रजवल्लभदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई। इस प्रसंग में समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया। ता. ३०-५-२०११ की सुबह ८ से ९ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक षोडशोपचार विधिकी गई। उसके बाद कथा की पूर्णाहुति तथा अन्नकूट की आरती की गई।

भावि पेढी के नवोदित सितारा ऋषिल तथा चि. ऋषभने मूल संप्रदाय तथा श्री नरनारायणदेव गादी की सुंदर चर्चा की। यजमान के द्वारा प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन तथा आरती की गई। प्रासंगिक सभा में पू. शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने उद्बोधन किया। सभा में पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) तथा शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजीने उद्बोधन किया था। सभा में स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी, महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी, शा. स्वा. रामानुजदासजी तथा हजुरी पार्षद भगत का भी पूजन किया गया।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये। इस प्रसंग पर शिकागो, डिट्रोईट, कोलंबस, सनसीटी तथा न्युयोर्क के हरिभक्त पधारे थे। - प्रकाश पटेल कलिवलेन्डड

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : स्वामी बलदेवप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी ता. २२-६-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए मूली मंदिर में अक्षरनिवासी हुए।

कालीयाणा (ता. विरमगाँव) : प.भ. भीखुभाई जेठुभाई मोरी के मातुश्री प.भ पुरीबहन जेठुभाई मोरी ज्येष्ठशुक्ल पक्ष-१४ के ता. १४-६-२०११ के मंगलवार के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई।

अहमदाबाद : प.भ. डॉ. गोविंदभाई (आनंदपुरावाले) के सुपुत्र श्री राजेशभाई ता. ८-५-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

बालासिनोर : काछीया शारदाबहन मणीलाल ता. २५-५-२०११ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई।

अहमदाबाद : प.भ. दयालभाई मथुरभाई पटेल ता. २०-५-२०११ को अक्षरनिवासी हुए।

सीडनी (ओस्ट्रेलीया) : श्री स्वामिनारायण मंदिर **(I.S.S.O.** सीडनी) **BLCK** के ट्रस्टी तथा खजानची श्री महेन्द्रभाई अमीन (मुकेशभाई) तथा श्री विमलभाई के पू. पिताश्री जिन्होंने फिजी में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. आचार्य महाराजश्री का सत्संग करके पदार्पण करवाकर उनकी बहुत सेवा की थी। उनका समस्त परिवार वर्तमान में सीड़नी में सेवा देता है। ऐसे हमारे प.भ. चंद्रकांतभाई अमीन (श्री बचुभाई, श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) : श्री स्वामिनारायण मंदिर **(I.S.S.O.**, ओकलेन्ड न्युझीलेन्ड) के प्रमुख श्री नरनारायणदेव के अति निष्ठावान तथा प.पू. आचार्य महारजश्री तथा समस्त धर्मकुल की कृपा से तथा सत्संग को संपूर्ण समर्पित ऐसे प.भ. डॉ. कांतिभाई तथा प.भ. जयंतीभाई के मातुश्री प.भ. गजराबहन नारजभाई पटेल श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

मोरबी : प.भ. गोदावरीबहन भगवानदास राणपुरा (उ. ७२ वर्ष) ता. १४-५-२००१के दिन श्रीहरि का ध्यान करते हुए अक्षरनिवासी हुई।

बावला : प.भ. सोनी हीराभाई केशवलाल (कच्छी) के धर्म पत्नि अ.सौ. जसुमतीबहन ता. १-५-२०११ के दिन श्रीहरिका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई।

हलवद (मयुरनगर) : श्री नरनारायणदेव तथा मूली श्री राधाकृष्णदेव के निष्ठावान युवक मंडल के सक्रिय कार्यकर प.भ. चिरागभाई ईश्वरभाई जोबनपुत्रा ता. २८-६-२०११ को श्रीहरि का ध्यान करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

गुरुपूर्णिमा गुरुपूजन महोत्सव

સમસ્ત સત્સંગને અતિ આનંદ સહ જણાવવાનું કે સર્વાવતારી શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને પોતાના સ્થાને પોતાનું જ દિવ્યકુળ ધર્મવંશી પરિવારના આચાર્ય મહારાજશ્રીને પ્રસ્થાપિત કરેલા છે. જે આપણા સંપ્રદાયની અલૌકિક અને દિવ્ય પરંપરા છે. જેથી અષાઢ સુદ-૧૫ ગુરુપૂર્ણિમાના શુભ દિને સમસ્ત સંત-હરિભક્તોને આપણા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના ગુરુ પૂજનના આયોજીત કાર્યક્રમમાં ઉપસ્થિત રહેવા આગ્રહ ભર્યું નિમંત્રણ છે.

ધર્મકુળ પૂજનના યજમાનશ્રી
શ્રીમતિ કિષ્ણાબેન નવિનભાઈ માંડલીયા (મોરબી)
હ. પ્રતિકભાઈ એન. માંડલીયા
તથા
કૃષ્ણા ડાયમંડ (દુબઈ) હ. દર્શન કૌશીકભાઈ

લિ.
મહંત સ્વામી
શાસ્ત્રી હરિકૃષ્ણદાસજીના
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

શુભ સ્થળઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર- કાલુપુર, અમદાવાદ ૩૮૦ ૦૦૧

મંગલ કાર્યક્રમઃ
અષાઢ સુદ-૧૫ ગુરુપૂર્ણિમા તા. ૧૫/૦૭/૨૦૧૧ ને શુક્રવાર
ગુરુપૂજન સમય : સવારે ૭:૦૦ કલાકથી શરૂ થશે.

નિમંત્રણ

પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય લાલજી મહારાજ
શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો ૧૪મો પ્રાક્ટ્યોત્સવ

ધર્મકુળ આશ્રિત શ્રી,

આપ સૌને સહર્ષ આનંદ ઉલ્લાસ સાથે જણાવવાનું જે સર્વાવતારી પૂર્ણ પુરૂષોત્તમ પરાત્પર પરબ્રહ્મ પરમાત્મા આપણા ઈષ્ટ દેવ શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને પોતાના સ્થાને સ્વયં પ્રસ્થાપિત કરેલ શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના પુત્રરત્ન અને સંપ્રદાયના ભાવિ આચાર્ય પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો ૧૪ મો પ્રાકટ્ય મહોત્સવ શ્રીનગર શહેરમાં બિરાજમાન ભરતખંડના રાજાધિરાજ શ્રી નરનારાયણદેવના રૂડા શુભ સાનિધ્યમાં તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની શુભ નિશ્રામાં દેશોદેશના પૂ.સંતો મહંતો અને ધર્મકુળ પ્રેમી હરિભક્તોની વિશાળ ઉપસ્થિતિમાં ધામધૂમથી સંપન્ન થશે. આવા શુભ મંગળ અવસરે સર્વે સંત હરિભક્તોને પધારવા અમારું ભાવભીનું નિમંત્રણ છે.

લિ. મહંત શાસ્ત્રી સ્વામી
હરિકૃષ્ણદાસજીના શ્રીહરિ સ્મૃતિ સહ
જયશ્રી સ્વામિનારાયણ

મંગલ કાર્યક્રમ :
અષાઢ વદ -૧૦ તા. ૨૫-૦૭-૨૦૧૧ને સોમવાર સવારે ૭:૩૦ કલાકે
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ-૧

Registered under RNI-GUJGUJ/2007/20221"Permitted to post at
Ahd PSO on 11th every month under postal REG. NO. GAMC.-003/9-11 issued SSP Ahd Valid
up to 31-12-2011 Licenced to Post without pre payment No. CPMG/GJ/01/07-08 valid up to 31/12/2011

૧

૨

૩

૪

૫

૧.આપણા ક્લીવલેન્ડ-અમેરિકા મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતાં પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨. સીનેમીન્સન-અમેરિકા મંદિરમાં ઠાકોરજીને ફૂલોના વાઘા. ૩. રતનપર પારાયણ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૪. પ્રાંતિજ મંદિના પાટોત્સવ પ્રસંગે યજમાનશ્રીનું અભિવાદન કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી. ૫-૬. રામોલ - જમફળવાડી (મહાદેવનગર) આપણા મંદિરમાં ૪થા પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટની આરતી ઉતારતા અને સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ. લાલજી મહારાશ્રી.

૬

Prafull Kharsani